जन्नत में क्या होगा ?

लेखक
मौलाना डा. मुहम्मद हबीबुल्लाह मुख़्तार

निसार पब्लिकेशन

में क्या होगा?

लेखक

मौलाना डा. मुहम्मद हबीबुल्लाह मुख़्तार

अनुवादकः

मुहम्मद इमरान क़ासमी एम.ए. (अलीग.)

नीसार पब्लिकेशन

422, मटियामहल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

क्र.स.	क्या?	कहां?
1.	मुक़द्दमा	7
2.	जन्नत के लुग़वी व शरई मायने	11
3.	तरोताज़ा चेहरे	12
4.	मुहर लगी शराब	12
5.	मोतियों के ख़ेमे, ज़मुर्रद के मिंबर	13
6.	नई उम्र के लड़के और ख़ादिम	13
7.	हूरें	14
8.	नहरें और बाग़ात	15
9.	मन पसन्द चीज़ें	15
10.	दिल को खुश करने वाले मशाग़िल	16
11.	आमने-सामने बैठना	17
12.	सोने-चाँदी के मकानात व बाग़ात	18
13.	जन्नत की नेमतें एक नज़र में	19
14.	बेनज़ीर और बेमिसाल	23
15.	जन्नत की क़द्र व मरतबा	24
16.	जन्नत की औरतें	24
17.	जन्नत का पेड़	24
18.	मोती का ख़ेमा	25
19.	जन्नतुल फ़िरदौस	26
20.	जन्नत के बाज़ार	26
21.	जन्नतियों की सिफ़तें	27

क्र.स.	क्या?	कहां?
22.	जन्नत में अल्लाह की तारीफ़ व पाकी बयान करना	28
23.	नाज़ व नेमत की जगह	29
24.	जन्नत में बीमारी न होगी	29
25.	जन्नत के बालाख़ाने	30
26.	नरमदिल जन्नती	31
27.	अल्लाह की रिज़ा	31
28.	मामूली दर्जे के जन्नती का ठिकाना	32
29.	जन्नत की चौखट	32
30.	जन्नत की ईंट-गारा	33
31.	जन्नत के पेड़ों का तना	34
32.	जन्नत के दर्जे	34
33.	जन्नत के दर्जों की वुसअ़त	34
34.	जन्नत की पोशाक	35
35.	जन्नत वालों की क़ुव्वत व ताक़त	36
36.	जन्नतियों के कंगन	36
37.	जन्नतियों का हुस्न व ख़ूबसूरती	36
38.	जन्नत वालों की उम्रें	37
39.	सिद्रतुल-मुन्तहा	37
40.	हौज़े कौसर	38
41.	जन्नत के घोड़े	38
42.	जन्नतियों की सफ़ें	40
43.	जन्नत का दरवाज़ा	40

क्र.स.	क्या?	कहां?
44.	जन्नत में ख़रीद व बेच	41
45.	जन्नत वालों के ख़ादिम व बीवियाँ	43
46.	जन्नतियों की उम्र	44
47.	जन्नतियों के ताज	44
48.	जन्नती के यहाँ गर्भ और पैदाइश	45
49.	हूरों के जमा होने की जगह	45
50.	चार दरिया	46
51.	जन्नत की औ़रत	47
52.	खेती-बाड़ी	48
53.	जन्नत में नींद न होगी	49
54.	अल्लाह तआ़ला का दीदार	50
55.	चौदहवीं का चाँद	50
56.	पर्दा हटा दिया जाएगा	51
57.	सबसे क म और सबसे बड़े दर्जे वाला जन्नती	52
58.	अल्लाह तआ़ला के दीदार की नज़ीर	53
59.	नूर ही नूर	54
60.	अल्लाह तआ़ला की ज़ियारत	55
61.	हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम	56
62.	अल्लाह का दीदार	59
63.	जन्नत की हूरें	62
64.	जन्नत के पेड़	62
65.	जन्नतियों की ख़ूबसूरती	63
66.	जन्नतियों का डील-डोल	63

क्र.स.	क्या?	कहां?
67.	जन्नत का पेड़ तूबा	64
68.	पाँच चीज़ें	65
69.	आख़िरत का आराम	66
70.	दुनिया आख़िरत की खेती है	66
71.	जन्नत का टिकट	67
72.	जन्नत की क़ीमत	67
73.	जन्नत व दोज़ख़ का दाख़िला	67
74.	जन्नत का मेहर	68
75.	जन्नत की क़िस्में	69
76.	नेमत का दस्तरख़्वान	69
77.	जन्नत की नेमतों की नज़ीरें	69
78.	ख़ात्मा	71

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुक़द्दमा

الحمد لله ذی الفضل والجنان، والصلوٰة والسلام علیٰ خیر خلقه محمد ذی الآیات والتبیان، وعلیٰ اٰله وصحبه ومن تبعهم الیٰ یوم القیامة باحسان، وبعد۔

मोहतरम हज़रात! आप हज़रात के सामने जन्नत से मुताल्लिक़ मुबारक हदीसों का कुछ हिस्सा पेश किया जा रहा है ताकि दुनियावी धन्धों, मश्ग़लों और आजकल की फ़िक्र के साथ-साथ हम अपनी पैदाइश के असल मक़सद को सामने रखें।

अल्लाह पाक का इर्शाद है:

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ، مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّ مَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ، اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُوالْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ۔

(الذاریات: ٥٦-٥٨)

तर्जुमाः और मैंने तो जिन्नात और इन्सान को पैदा ही इस ग़र्ज़ से किया है कि मेरी इबादत किया करें। मैं उनसे न रोज़ी चाहता हूँ और न यह चाहता हूँ कि मुझे खिलाया करें, अल्लाह तो खुद ही सबको रोज़ी पहुँचाने वाला है, ताक़त वाला मज़बूत है।

ऐ इन्सान! तू अपनी पैदाइश के मक़सद को जान ले, अल्लाह तआला की इबादत में लग जा, अल्लाह तआला तेरी तमाम हाजतों और ज़रूरतों को पूरा कर देगा। वह तो ऐसा ख़ालिक़ है जिसने तेरे वजूद में आने से पहले तेरे रिज़्क़ को मुक़र्रर कर दिया है। फ़रमायाः

وَفِی السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ۔ (الذاریات: ٢٢)

तर्जुमाः और आसमान में तुम्हारा रिज़्क़ भी है और वह भी जिसका तुमसे वायदा किया जाता है।

तू अपने असल काम में लग जा, तेरा आक़ा और मौला तेरी ज़रूरियात का कफ़ील होगा। इन्सान अभी माँ के पेट में होता है कि उसके रिज़्क़ का वहीं से इन्तिज़ाम कर दिया जाता है। माँ के पेट से बाहर आया और रब्बे जुल-जलाल ने अपने फ़ज़्ल व करम से उसके लिए दूध की ऐसी नहरें जारी कर दीं जिनमें मिठास भी है, हल्कापन भी है, लज़्ज़त भी है, ज़रूरत के मुताबिक़ हरारत भी है और जिस्म की बढ़ोतरी के लिए कुव्वत और ताक़त भी। औरत का सीना नौमौलूद (नव जात) के लिए रिज़्क़ का कुदरती ज़रिया और दूध का खुश्क न होने वाला चश्मा बन जाता है। जो ज़ात उस वक़्त तुम्हें पालती और रिज़्क़ मुहैया करती है वह सारी ज़िन्दगी रिज़्क़ देगी। इस दुनिया में अपने असली मक़सद को जानो। याद रखो! अगर तुमने इस खेत में आख़िरत में काम आने वाली खेती बोई तो मज़े करोगे वरना इसका अन्जाम बड़ा तबाहकुन और दर्दनाक होगा।

अंबिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम हर ज़माने में लोगों को भूला सबक़ यद दिलाने आए और सबसे आख़िर में ख़ातिमुल अंबिया हबीबे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और उन्होंने भी ख़ुदा की मख़्लूक़ को ख़ुदा से इसी तरीक़े से मिलाया जिस तरह उनके साथी अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम ने मिलाया था। नेक आमाल पर जन्नत का वायदा किया गया है। अपने फ़रीज़े को अदा कीजिए और उसपर फ़ज़्ले इलाही से हमेशा की नेमतों के मुस्तहिक़ बन जाइए।

दुनिया आज़माइश, चिन्ताओं, ग़मों और परेशानियों का घर है। इन परेशानियों से ग़मगीन, परेशान और बेक़रार न होओ सब्र करो।

दुनियावी के मज़े उड़ाने में न लगो। आख़िरत की नेमतें और याद करके इन दुनियावी लज़्ज़तों से मुंह फेर लो। हराम चीज़ों को अल्लाह जल्ल शानुहू के ख़ौफ़ व डर और जन्नत की नेमतों के हासिल होने की नीयत से छोड़ दो। वहाँ तुम्हें हमेशा रहने वाली नेमतें मिलेंगी। जन्नत की उन राहतों के मुक़ाबले पर तमाम दुनिया की राहतें और नमतें बेहक़ीक़त हैं। अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ को सामने रखते हुए अपने आपको सही रास्ते पर रखिए। जन्नत की लौ लगाइए, सही रास्ते पर अग्रसर रहिए, इन्शा अल्लाह जन्नत की अ़ज़ीम दौलत और वसीअ् सल्तनत मिलेगी और दर्दनाक जहन्नम के अ़ज़ाब और अल्लाह के ग़ज़ब से छुटकारा हासिल होगा।

दिल चाहा कि पढ़ने वालों की ख़िदमत में जन्नत से मुताल्लिक़ चन्द क़ुरआनी आयतें और मुबारक हदीसें पेश कर दी जाएं जो अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दों के लिए जाज़िब और जन्नत की तरफ़ ले जाने का ज़रिया बनें और किसी की दुआ़ से इस नाकारा को भी जन्नत का परवाना मिल जाए तो बड़ी ही खुशनसीबी की बात हो। अल्लाह की रहमत बहाना ढूंढती है, शायद यही बहाना बन जाए। इसलिए आने वाले पन्नों में यह मुबारक ज़ख़ीरा पेश किया जा रहा है।

इसलिए ऐ क़ियामत और आख़िरत पर ईमान व यक़ीन रखने वालो! ऐ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मानने वालो! ऐ क़ुरआने करीम और अहादीसे नबविया के मानने वालो! ग़फ़लत की नींद से जागो, न मालूम कब, किस वक़्त और कहाँ आँख बन्द हो जाए और फिर जन्नत और दोज़ख़ में से एक की तरफ़ भेज दिया जाए। अभी वक़्त है, अभी मोहलत मिली हुई है, अभी अ़मल करने की जगह में हो, जो करना है कर लो, चन्द दिन की मेहनत व मशक़्क़त

चन्द सालों की तंगी तुर्शी, ज़रा सी देर के लिए नफ़्स को कुचलना, ख़्वाहिशात की नाफ़रमानी, हमेशा की जन्नत, कभी ख़त्म न होने वाली नेमतों और अल्लाह जल्ल शानुहू की रिज़ा और ख़ुशनूदी दिलाने का ज़रिया बन सकती है। इसलिए अ़हद कीजिए कि नफ़्स व शैतान की गुलामी और दुनियावी लज़्ज़तों और ख़्वाहिशों की इत्तिबा के बजाय अल्लाह जल्ल शानुहू और उसके रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अहकामों की पैरवी करेंगे। अल्लाह जल्ल शानुहू हमें और आप सबको जन्नत का मुस्तहिक़ बनाए, नेक आमाल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और हमारे मरहूमीन को जन्नतुल फ़िरदौस अ़ता फ़रमाए, आमीन।

मेरे भाई मौलाना अ़ताउर्रहमान साहिब और मेरे भाई मौलाना मुहिब्बुल्लाह साहिब का शुक्रिया अदा करना ज़रूरी है। इख़्लास से तसही (प्रूफ़ रीडिंग) की और बिरादरे मोहतरम सैयद शाहिद हसन साहिब का भी कि एहतिमाम से छपाई कराई। अल्लाह तआ़ला सब हज़रात को जज़ाए ख़ैर दे।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين، والصلوٰة والسلام على
خير خلقهٖ محمد وآله و صحبه اجمعين۔

लेखक

मुहम्मद हबीबुल्लाह मुख़्तार

१, ७, १४०६ हिजरी, मुताबिक़ ८, २, १९८६ ई.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जन्नत के लुग़वी व शरई मायने

लुग़त में जन्नत के मायने ऐसा बाग़ जिसमें घने पेड़ हों। जिस लफ़्ज़ में 'जीम' और 'नून' होगा आम तौर से उसके मायने मख़्फ़ी और छुपी हुई चीज़ के आते हैं जैसे जन्नत, इसलिए कि वह हमारी आँखों से पोशीदा है। उसपर ईमान बिलग़ैब लाने का हुक्म दिया गया है। मोमिन उसपर उससे ज़्यादा यक़ीन व ईमान रखता है जो उसे आँखों से देखकर हासिल होता है। इसी तरह 'जिनीन' उस बच्चे को कहते हैं जो माँ के पेट में छुपा होता है। 'जुनून' एक बीमारी है जो इन्सान की अक़्ल पर पर्दा डाल देती है। 'जिन्न' एक मख़्लूक़ है जो हमारी आँखों से पोशीदा है। (१)

जन्नत को जन्नत इसलिए कहा जाता है कि उसमें बड़े-बड़े सायादार फैली हुई टहनियों वाले पेड़ होंगे या इसलिए कि उसमें बाग़ होंगे और या इसलिए कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने जन्नतियों के लिए आँखों की ठन्डक का अजीब सामान पोशीदा कर रखा है।

शरीअत में जन्नत से वह लाफ़ानी और हमेशा रहने वाला लम्बा-चौड़ा घर मुराद है जो अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने मोमिन बन्दों के लिए बेशुमार नेमतों, इकराम, सम्मान और हूर व महलों के साथ तैयार कर रखा है। जन्नत और दोज़ख़ दोनों पैदा हो चुकी और मौजूद हैं, यही अहले सुन्नत वल जमाअत का मज़हब है। यही क़ुरआने करीम की बेशुमार आयतों और बहुत सी हदीसों से साबित है।

जन्नत बड़ी बेहतरीन शानदार, पुरकैफ़, पुरबहार, शानदार और

(१) ताजुल उरूस (जिल्द ६, पेज: १६३,१६६)

देखने के लायक़ है। वहां की नेमतें बड़ी अ़जीब और हमेशा रहने वाली होंगी। वहां की राहतें, आराम और इनामात अनमोल होंगे। वहां की हर चीज़ सदाबहार और कभी ख़त्म न होने वाली होगी। वह अंबिया, मुक़र्रबीन, सालिहीन, नेक काम करने वालों के रहने की जगह है वहां तक्लीफ़, रंज, ग़म और परेशानी व मलाल का नाम व निशान न होगा।

बहिश्त आं जा अस्त कि आज़ारे न बाशद
कसे रा बा-कसे कारे न बाशद

तर्जुमाः जन्नत वह जगह है कि वहां कोई तक्लीफ़ न होगी, किसी को किसी से कोई सरोकार न होगा।

तरोताज़ा चेहरे

ज़रा सोचिए तो सही कि जन्नती कैसे मज़े में होंगे। चेहरे नेमतों के हासिल होने से चमकते और अल्लाह पाक के दीदार की वजह से तरोताज़ा और नूर भरे होंगे। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:

تَعْرِفُ فِیْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِیْمِ۔ (المطففین: ۲٤)

तर्जुमाः तू उनके चेहरों ही से राहत की तरोताज़गी जान लेगा।

وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّ سُرُوْرًا۔ (الدھر: ۱۱)

तर्जुमाः और उनको ताज़गी और ख़ुशी अ़ता करेगा।

मुहर लगी शराब

मुहर लगी हुई आला दर्जे की शराब पिलाई जाएगी। फ़रमायाः

یُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِیْقٍ مَّخْتُوْمٍ، خِتٰمُهٗ مِسْكٌ۔ (المطففین: ۲۶،۲٥)

तर्जुमाः उन्हें पीने को ख़ालिस शराब मिलेगी जिसपर मुश्क की मुहर लगी होगी।

یُطَافُ عَلَیْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِیْنٍ، بَیْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِیْنَ، لَا فِیْهَا غَوْلٌ

وَّلَاهُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ۔ (الصافات: ٤٥، ٤٦، ٤٧)

तर्जुमाः उनपर जाम का दौर करेगा बहती हुई शराब से (लबरेज़) सफ़ेद सफ़ेद, पीने वालों के हक़ में ख़ूब लज़ीज़, उससे न चक्कर आएगा और न उससे वे बहकी-बहकी बातें करेंगे।

मोतियों के ख़ेमे, ज़मुर्रद के मिंबर

मोतियों से बने हुए ख़ेमों में तह-बतह बिस्तरों पर याक़ूत व ज़मुर्रद (हरे रंग के क़ीमती पत्थरों) के मिंबरों पर बैठे होंगे। फ़रमायाः

مُتَّكِئِيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ۔ (الطور: ٢٠)

तर्जुमाः तकिया लगाए होंगे बराबर बिछे हुए तख़्तों पर।

مُتَّكِئِيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّ عَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ۔ (الرحمٰن: ٧٦)

तर्जुमाः ये लोग तकिया लगाए होंगे सब्ज़ मसनदों और अजीब ख़ूबसूरत कपड़ों (के फ़र्श) पर।

गाव-तकियों से टेक लगाए होंगे

مُتَّكِئِيْنَ عَلٰى فُرُشٍ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ۔ (الرحمٰن: ٥٤)

तर्जुमाः वे लोग तकिया लगाए फ़र्शों पर बैठे होंगे जिनके अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे।

عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِئُوْنَ۔ (يٰس: ٥٦)

तर्जुमाः मसहरियों पर तकिया लगाए बैठी होंगी।

مُتَّكِئِيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ۔ (الكهف: ٣١)

तर्जुमाः उसमें मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे।

नई उम्र के लड़के और ख़ादिम

शराब, शहद, दूध और पानी की नहरों के किनारे बैठे होंगे। खिदमत गुज़ार लड़के ख़ादिम चारों तरफ़ इशारे के मुन्तज़िर होंगे।

फ़रमायाः

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ۔ (الطور: ٢٤)

तर्जुमाः और उनके पास लड़के आएं-जाएंगे जो उनके लिए हैं, गोया वे महफ़ूज़ मोती हैं।

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ۔ (الواقعة: ١٧)

तर्जुमाः उनके पास लड़के आएं-जाएंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे।

हूरें

हसीन व ख़ूबसूरत बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें उनकी मुन्तज़िर होंगी, जिनकी ख़ूबी यूँ ज़िक्र फ़रमाईः

فِيْهِنَّ قٰصِرَاتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ، كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ۔ (الرحمن: ٥٦، ٥٨)

तर्जुमाः उन (मकानों) में नीची निगाह वालियाँ होंगी कि उन लोगों से पहले उनपर किसी इन्सान ने तसर्रुफ़ किया होगा न जिन्न ने......गोया वे याकूत और मरजान हैं।

فِيْهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ، حُوْرٌ مَّقْصُوْرَاتٌ فِي الْخِيَامِ۔ (الرحمن: ٧٠، ٧٢)

तर्जुमाः उनमें अच्छी सीरत वालियाँ अच्छी सूरत वालियाँ होंगी......गोरे रंग वालियाँ ख़ेमों में महफ़ूज़ होंगी और नौख़ेज़ हम-उम्र औरतें।

तरह-तरह के लिबासों, पोशाकों, ज़ेवरात और बनाव-सिंघार से सजी-धजी होंगी। हीरे जवाहरात के ताज उनके सरों पर होंगे। फ़रमायाः

وَحُوْرٌ عِيْنٌ، كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ، جَزَآءً بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۔

(الواقعة: ٢٢، ٢٣، ٢٤)

तर्जुमाः और गोरी बड़ी आँखों वालियाँ जैसे पोशीदा रखा हुआ मोती, यह उनके अ़मल के सिले में मिलेगा।

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ۔ (صٓ: ٥٢)

तर्जुमाः और उनके पास नीची निगाह वालियाँ हम-उम्र होंगी।

नहरें और बाग़ात

जन्नती अपने-अपने आमाल व नेकियों की बदौलत जन्नत के चश्मों, नहरों और बाग़ों में मज़े करेंगे। फ़रमायाः

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ، اُدْخُلُوْهَا بِسَلَامٍ اٰمِنِيْنَ۔ (الحجر: ٤٥، ٤٦)

तर्जुमाः बेशक परहेज़गार बाग़ों और चश्मों में (बसते) होंगे। तुम दाख़िल हो उनमें सलामती (और) अमन के साथ।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّ يَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِئِيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ۔ (الكهف: ٣١)

तर्जुमाः ये वे लोग हैं कि उनके लिए हमेशगी के बाग़ात हैं उनके नीचे नदियाँ बह रही होंगी। उनको उसमें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वे सब्ज़ रंग के कपड़े बारीक और दबीज़ पहनेंगे। उसमें मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे।

मन पसन्द चीज़ें

अल्लाह तआ़ला के तरह-तरह के इनामात से फ़ायदा उठाते और अपनी पसन्दीदा चीज़ों से मज़े लेते होंगे। उनपर वहां न किसी क़िस्म का ख़ौफ़ तारी होगा, न नेमतों के छिनने और अपनी मौत का डर होगा। लिबास, पोशाक और ज़ेवरात से सजे होंगे। फ़रमायाः

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِىْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا۔ (مريم: ٦٣)

तर्जुमाः यह जन्नत ऐसी है कि हम अपने बन्दों में से इसका वारिस उसको बना देंगे जो (अल्लाह से) डरने वाला हो।

لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ۔ (یونس: ٦٢)

तर्जुमाः क़तई तौर पर न कोई ख़ौफ़ है और न वे ग़मगीन होंगे।

يَلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ...... لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى۔ (الدخان: ٥٣،٥٦)

तर्जुमाः लिबास पहने होंगे बारीक और दबीज़ रेशम का आमने-सामने बैठे हुए...... वे वहाँ मौत का मज़ा भी न चखेंगे, हाँ सिवाय इस पहली मौत के।

يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّ لُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ۔ (الحج: ٢٣)

तर्जुमाः वहाँ उनको कंगन सोने के और मोती के पहनाए जाएंगे। वहाँ उनकी रेशम की पोशाक होगी।

وَهُمْ فِىْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ۔ (الانبیآء: ١٠٢)

तर्जुमाः और वे लोग अपनी जी चाही चीज़ों में हमेशा रहेंगे।

दिल को खुश करने वाले मशाग़िल

दिल को खुश करने वाले मशाग़िल में मश्ग़ूल होंगे। जो मांगेंगे मिलेगा। फ़रमायाः

اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِىْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ، هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِىْ ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِئُوْنَ، لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ۔

(یٰسٓ: ٥٥،٥٦،٥٧)

तर्जुमाः जन्नत वाले बेशक उस दिन अपने मश्ग़ले में खुश दिल होंगे। वे और उनकी बीवियाँ सायों में तकिया लगाए बैठी होंगी। उनके लिए वहाँ मेवे होंगे और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो कुछ वे

माँगेंगे।

وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ۔ (الزخرف: ۷۱)

तर्जुमाः और वहाँ वह सब कुछ मिलेगा जिसको जी चहेगा और जिससे आँखों को लज़्ज़त मिलेगी।

आमने-सामने बैठना

आमने-सामने मस्नद पर बैठे जन्नत में मज़े करेंगे।

فِىْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ، عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ، يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ۔

(الصافات: ۴۳، ۴۴، ۴۵)

तर्जुमाः राहत के बाग़ों में होंगे तख़्तों पर आमने-सामने बैठे हुए। उनपर जाम दौर करेगा बहती हुई (शराब) से (लबरेज़)।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ، فِىْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ، يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ۔ (الدخان: ۵۱، ۵۲، ۵۳)

तर्जुमाः अल्लाह तआला से डरने वाले बेशक अमन की जगह में होंगे (यानी) बाग़ों में और नहरों में लिबास पहने होंगे बारीक और दबीज़ रेशम का, आमने-सामने बैठे हुए।

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ، وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ، وَحُوْرٌ عِيْنٌ، كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ۔ (واقعة: ۲۰ – ۲۳)

तर्जुमाः और मेवे जिनको वे पसन्द करेंगे और परिन्दों का गोश्त जो उन्हें पसन्दीदा हो, और गोरी बड़ी आँखों वालियाँ जैसे पोशीदा रखा हुआ मोती।

لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ خٰلِدِيْنَ۔ (الفرقان: ۱۶)

तर्जुमाः उन्हें वहाँ जो कुछ वे चाहेंगे मिलेगा, वे हमेशा रहेंगे।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ۔ (ق: ۳۵)

तर्जुमाः उन लोगों को वहाँ सब कुछ मिलेगा जो वे चाहेंगे। और हमारे पास और भी ज़्यादा है।

सोने-चाँदी के मकानात व बाग़ात

जन्नती जन्नत में चाँदी सोने के मकानात, पेड़, बाग़ात और ऐसी नहरें पायेंगे जिनकी ज़मीन चाँदी की, कंकर मरजान के होंगे। जन्नत की ज़मीन की मिट्टी खुशबूदार मुश्क और घास ज़ाफ़रान की होगी।

उनके पास चाँदी के मोतियों, याकूत और मरजान से जड़े हुए प्याले लाए जाएंगे उनमें मुहर लगी शराब होगी जिसमें सल्सबील का मीठा पानी मिला हुआ होगा। प्याले ऐसे चमकदार और रोशन और लतीफ़ होंगे कि बाहर से शराब का नज़ारा होता होगा। ये जाम ऐसे ख़ादिम के हाथ में होंगे जिसके चेहरे की चमक चमकते सूरज की तरह होगी लेकिन उस तेज़ी में मिठास व हुस्न और कशिश व ख़ूबसूरती होगी इसलिए जो शख़्स ऐसे हमेशा रहने के घर पर यक़ीन रखता है और उसे यह मालूम है कि वहाँ न मौत आएगी न किसी क़िस्म की तक्लीफ़ और ग़म व रंज, वहाँ न किसी क़िस्म का बदलाव और तब्दीली आएगी न उतार चढ़ाव, तो फिर भला वह ऐसे घर में कैसे दिल लगाता है जो ख़त्म और तबाह होने वाला है। उसके बाप-दादा यहाँ से रुख़्सत हुए और उसे भी एक दिन यहाँ से जाना है। अगर जन्नत में उसके सिवा और कोई नेमत न होती कि इन्सान वहाँ हमेशा सही सालिम तन्दुरुस्त व ताक़तवर रहेगा, भूख-प्यास और मौत का नाम व निशान न होगा, तब भी वह जन्नत इस लायक़ थी कि उसकी ख़ातिर फ़ानी दुनिया से किनारा-कशी और मुंह फेर लिया जाए और उसपर इस दुनिया को तरजीह न दी जए जो हर एतिबार से आज़माइश का घर, मुसीबतों का मक़ाम, और आफ़तों व बलाओं का

घर है। इसके मुक़ाबले में जन्नती जन्नत में हमेशा-हमेशा नेमतों में मज़े करेंगे।

जन्नती अल्लाह जल्ल शानुहू के दीदार से लुत्फ़ हासिल करेंगे और उस दीदार से उन्हें वह लज़्ज़त व कैफ़ हासिल होगा जो और किसी नेमत से हासिल न हुआ होगा। मौला-ए-करीम का दीदार और निकटता, रिज़ा व खुशनूदी और सेहत व आफ़ियत, हमेशगी व बक़ा तमाम नेमतें इकट्ठी मिलेंगी। ऐसी जन्नत से लापरवाही बरतना और ऐसी दुनिया से दिल लगाना और उसमें मस्त रहना हिमाक़त, बेवक़ूफ़ी और बड़ी नासमझी की बात है।

क़ुरआन करीम में जन्नत की नेमतों, सिफ़तों, हूर व ख़ादिम और इकराम व सम्मान को मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर ज़िक्र किया गया है, पढ़िए और ईमान व यक़ीन में इज़ाफ़ा कीजिए। सूरः रहमान और सूरः वाक़िआ में ख़ास तौर से उनका तज़किरा मिलता है। हदीसों में भी इनको मुफ़स्सल बयान किया गया है, हमने इन हदीसों को मिश्कात शरीफ़ और बाज़ दूसरी किताबों से लिया है। सबका बयान करना मक़सूद न था वरना यह रिसाला बहुत बड़ा हो जाता इसलिए चन्द पेजों पर इक्तिफ़ा की ख़ातिर हदीस की दूसरी किताबों को छोड़ दिया गया है।

जन्नत की नेमतें एक नज़र में

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने एहयाउल उलूम (१) में जन्नत से मुताल्लिक़ कुछ तफ़सील लिखी है, वहां से कुछ हिस्सा मुख़्तसर तौर पर नक़ल किए देते हैं।

नेकियों और ताआ़त के एतिबार से जन्नत के बहुत से दरवाज़े

(१) एहयाउल उलूम जिल्द ४ पेजः ३८४,३८५

हैं। एक रिवायत से मालूम होता है कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। जन्नत के बालाख़ाने बेशुमार हैं। हर शख़्स को उसके मर्तबे के हिसाब से बालाख़ाने मिलेंगे। इसलिए अगर आपको ऊँचे दर्जे चाहिएं तो आप यह कोशिश कीजिए कि नेकियों और ताआत में दूसरों से आगे बढ़ें, दूसरे आपसे आगे न बढ़ सकें, इसमें मुक़ाबला करना चाहिए। इर्शाद है:

سَابِقُوْٓا اِلٰی مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ۔ (الحدید: ٢١)

तर्जुमाः दौड़ो अपने परवर्दिगार की मग़फ़िरत की तरफ़।

وَفِیْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ۔ (المطففین:٢٦)

तर्जुमाः और ऐसी ही चीज़ की हिर्स करना चाहिए हिर्स करने वालों को।

जिस तरह आप दुनिया में यह चाहते हैं कि माल व दौलत जायदाद, मकान वग़ैरह में आप सबसे आगे रहें इसी तरह जन्नत व आख़िरत के बारे में भी यही ज़ौक़ रखिए ताकि आप आला से आला दर्जे हासिल कर सकें। जहाँ किसी के आगे बढ़ने का इमकान (संभावना) ही नहीं रहेगा।

जन्नत की दीवारों की एक ईंट सोने की होगी, एक चाँदी की। मिट्टी ज़ाफ़रान और गारा मुश्क का होगा। बड़े-बड़े दरख़्त और शहद, शराब, दूध और पानी की नहरें बहती होंगी। दरख़्तों के तने सोने-चाँदी और मोतियों के होंगे। फलों से लदे हुए होंगे। जन्नतियों को सोना-चाँदी हीरे-जवाहिरात रेशम व सुनदुस पहनाया जाएगा। उनके कपड़े न पुराने होंगे न बोसीदा। जवानी को कभी घुन नहीं लगेगा। तीस (३०) तैंतीस (३३) साल के सदाबहार जवान रहेंगे। पसीने से मुश्क की ख़ुशबू आती होगी।

जन्नतियों का खाना मुख़्तलिफ क़िस्म के फल, मोटे ताज़े परिन्दे, मन्न व सलवा, दूध, शहद और दूसरी बेशुमार चीज़ें होंगी। देखने में एक जैसी लेकिन ज़ायक़ा अलग-अलग होगा। इर्शाद है:

كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا قَالُوا هٰذَا الَّذِىْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَاُتُوا بِهٖ مُتَشَابِهًا۔ (البقرة: ٢٥)

तुर्जमाः उन्हें जब कोई फल खाने को दिया जाएगा तो वे बोल उठेंगे कि यह तो वही है जो हमें (इससे) पहले मिल चुका है। और उन्हें वह (वाक़ई) दिया ही जाएगा मिलता-जुलता हुआ।

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि से नक़ल किया गया है कि जन्नत के अनार बड़े डोल के बराबर होंगे। उसकी नहरें ऐसे पानी की होंगी जो कभी बदबूदार न होगा। ऐसे दूध की नहरें होंगी जिसके मज़े में बदलाव नहीं आएगा। ख़ालिस ऐसे शहद की नहरें होंगी जो इन्सानों का साफ़ किया हुआ न होगा। ऐसी शराब की नहरें होंगी जो बड़ी लज़ीज़ होंगी पीने वाले उसे पीकर मदहोश न होंगे न उससे सिरदर्द होगा। वहाँ ऐसी नेमतें होंगी जिन्हें न किसी आँख ने देखा होगा न किसी कान ने सुना होगा, न किसी दिल पर उनका ख़्याल गुज़रा होगा। ऐश व आराम में मज़े करने वाले तैंतीस साल के हम-उम्र शहज़ादे होंगे। आसमान में उनका क़द साठ हाथ होगा। पुरकशिश जिस्म फ़ालतू बालों से ख़ाली। बेदाढ़ी, अज़ाब से महफ़ूज़ पुरसुकून व मुत्मइन होंगे। उसकी नहरों में याक़ूत-ज़बर्जद की कंकरियां होंगी। उसमें पेड़ों की जड़ें, तने व बेलें मोतियों की होंगी। उनके फलों का इल्म अल्लाह जल्ल शानुहू ही को है। उसकी ख़ुशबू पाँच सौ साल की दूरी से आएगी।

वहाँ हल्के-फुल्के ऊँट घोड़े होंगे। उनके कजावे, लगामें और ज़मीनें

याकूत की होंगी। एक दूसरे की ज़ियारत करेंगे। उनकी बीवियाँ बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें होंगी। वे महफ़ूज़ छुपे छुपाए रखे हुए अंडे की तरह साफ़ सुथरी होंगी। एक-एक औरत अपनी दो उंगलियों के दरमियान सत्तर पोशाकें थामे होगी। वह उन्हें पहनेगी लेकिन वह इतनी लतीफ़ और साफ़-चमकदार व बारीक होंगी कि उनके अन्दर उसकी पिंडली का गूदा नज़र आएगा। अल्लाह तआला ने उनके पाकीज़ा अख़्लाक़ कर दिए होंगे। उनके जिस्म मरने से महफ़ूज़ होंगे। वहाँ न नाक से गंदगी आएगी न मुँह से थूक। न पेशाब आएगा न पाख़ाना। डकार आएगी उससे खाना हज़म हो।।। मुश्क की खुशबू वाला पसीना आएगा। उन्हें वहाँ सुबह व शाम रिज़्क़ मिलेगा।

जन्नत में जो शख़्स सबसे आख़िर में दाख़िल होगा और सबसे कम दर्जे वाला होगा उसकी हुकूमत निगाह की हद तक सौ साल की दूरी तक फैली हुई होगी। सोने-चाँदी के महल और मोतियों के ख़ेमे होंगे। उसकी निगाह इतनी तेज़ कर दी जाएगी कि वह दूर की जगह क़रीब की तरह देखेगा। उसका सुबह का खाना सत्तर हज़ार सोने की प्लेटों में लाया जाएगा और इसी तरह शाम का खाना भी। हर प्लेट में ऐसा खाना होगा जो दूसरी में न होगा और उसे आख़िरी प्लेट का मज़ा भी इसी तरह आएगा जिस तरह पहली प्लेट का मज़ा आया था।

जन्नत में एक मोती होगा जिसमें सत्तर हज़ार घर होंगे। हर घर में सत्तर हज़ार कमरे होंगे। वहाँ न कोई सूराख़ होगा न फटन व दरार।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः जन्नत में एक ऐसी हूर होगी जिसे "ऐना" कहा जाता होगा। जब वह चलेगी तो उसके दाएं-बाएं सत्तर हज़ार ख़ादिमाएं चलेंगी। वे हूरें कहती होंगीः कहा

हैं वे लोग जो अच्छी बातों का हुक्म दते और बुरी बातों से रोकते थे।

हज़रत यहया बिन मुआज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमायाः दुनिया का छोड़ना मुश्किल काम है और जन्नत से महरूम रह जाना उससे भी सख़्त है। आख़िरत का मेहर दुनिया का छोड़ना ही है। तथा यह भी फ़रमायाः दुनिया के पीछे पड़ना ज़िल्लत का ज़रिया है और आख़िरत का तलब करना इज़्ज़त का सबब है। ताज्जुब है उस शख़्स पर जो फ़ानी को तलब करके ज़िल्लत पसन्द करता है और बाक़ी रहने वाली हमेशा की नेमत को तलब न करके इज़्ज़त व रुतबे को छोड़ देता है।

बेनज़ीर और बेमिसाल

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया हैः मैंने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसी नेमतें तैयार की हैं जो न किसी आँख ने देखीं, न किसी कान ने सुनीं और न किसी के दिल पर उनका ख़्याल गुज़रा होगा। और तुम चाहो तो गवाही के लिए यह आयते करीमा पढ़ लोः

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ. (السجدة: ١٧)

यानी जन्नत में ऐसी नमतें होंगी जिनको किसी आँख ने न देख होगा, न उसके वस्फ़ और ख़ूबी के बारे में किसी कान ने सुना होगा और न ही उसकी हक़ीक़त का किसी दिल पर गुज़र हुआ होगा। यह भी हो सकता है कि यह मुराद हो कि ऐसी ख़ूबसूरत सूरतें होंगी जो किसी आँख ने न देखी होंगी, और ऐसी प्यारी आवाजें होंगी जो किसी कान ने न सुनी होंगी, और ऐसे दिल खुश करने वाले ख़्यालात और असबाब होंगे जिनका किसी दिल पर गुज़र न हुआ होगा। वहाँ ऐसी खुशी, सुरूर और मक़सूद व पसन्दीदा चीज़ें हासिल करेंगे। खुशी होगी

जो आँखों की ठन्डक का सबब बनेगी।

जन्नत की क़द्र व मरतबा

उन्हीं से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में एक कोड़े के बराबर जगह, दुनिया और जो कुछ उसमें है सबसे बेहतर है। इसलिए कि व० हमेशा रहने वाली है। दुनिया अगर किसी को सारी भी मिल जाए तब भी वक़्ती व फ़ानी है।

जन्नत की औ़रतें

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया हैः अल्लाह के रास्ते में एक सुबह या एक शाम का निकलना दुनिया और जो कुछ उसमें है सबसे बेहतर है। और अगर जन्नत की औ़रतों में से एक औ़रत ज़मीन की तरफ़ झांक ले तो दोनों (यानी जन्नत और दुनिया या आसमान व ज़मीन) के दरमियान का हिस्सा सब रोशन हो जाए और उन दोनों के दरमियान खुशबू महक जाए। और उसके सर का दुपट्टा दुनिया और उसमें जो है सबसे बेहतर है। (१)

अल्लाह के रास्ते में निकलने पर इतना अ़ज़ीम सवाब मिलता है जिसके मुक़ाबले में तमाम दुनिया बेहक़ीक़त है। जन्नत की औ़रतें ऐसी ख़ूबसूरत होंगी कि उनके जमाल से सारा जहाँ रोशन हो जाए। जिनके जिस्म की खुशबू और दुपट्टे का यह हाल है खुद वे किस क़द्र हसीन होंगी, इसका अन्दाज़ा इस दुनिया में नहीं हो सकता।

जन्नत का पेड़

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह

(१) बुख़ारी शरीफ़

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है: जन्नत में एक पेड़ है (यानी तूबा) जिसके साय में अगर घुड़सवार सौ साल तक चले तब भी उसको तय न कर सके। और जन्नत में तुममें से एक शख़्स की एक कमान के बराबर का फ़ासला इस सबसे बेहतर है जिसपर सूरज निकला या गुरूब हुआ। (१)

यानी इतना बड़ा पेड़ है कि उसकी शाख़ों के नीचे घुड़सवार सौ साल भी चलता रहे तब भी उसकी शाख़ें ख़त्म न हों। साय से दुनिया वाला साया मुराद नहीं है इसलिए कि वहाँ सूरज न होगा।

मोती का ख़ेमा

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है: जन्नत में मोमिन के लिए मोती में सूराख़ करके एक ऐसा ख़ेमा बन जाएगा कि जिसकी चौड़ाई एक रिवायत में है कि उसकी लम्बाई साठ मील की होगी। उसके हर कोने में ऐसी बीवियाँ होंगी जो दूसरों को न देख सकेंगी। मोमिन उन सबसे मिलेगा और दो जन्नतें चाँदी की होंगी उसके बरतन और जो कुछ उसमें है सब चाँदी का होगा। और दो जन्नतें सोने की होंगी, उसके बरतन और जो कुछ उसमें है सब सोने का होगा। और (जन्नत में) बन्दों और अल्लाह जल्ल शानुहू के दीदार के दरमियान जलाल व बड़ाई की चादर आड़ होगी जो अल्लाह तआ़ला ने अपने ऊपर डाली होगी। ये मोमिन वहाँ हमेशा-हमेशा रहेंगे। (२)

जन्नत की हर चीज़ बेनज़ीर है। एक मोती सूराख़ करके इतना बड़ा ख़ेमा बनाया जायेगा। वहाँ जन्नतियों की बीवियाँ होंगी लेकिन अल्लाह तआ़ला उनके दरमियन ऐसा पर्दा कर देगा कि वे एक दूसरे

(१) बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़ (२) बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़

को न देख सकेंगी ताकि कोई किसी की आज़ादी, ऐश व आराम और लज़्ज़त उठाने में ख़लल डालने वाला न हो।

जन्नतुल फ़िरदौस

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया हैः जन्नत में सौ दर्जे हैं, हर दो दर्जों के दरमियान इतना फ़ासला है जितना आसमान व ज़मीन के दरमियान है और जन्नतुल फ़िरदौस उनमें सबसे आला दर्जा है। वहीं से जन्नत की चारों नहरें निकलती हैं। उसके ऊपर अ़र्शे इलाही है, इसलिए तुम जब अल्लाह तआ़ला से जन्नत मांगो तो जन्नतुल फ़िरदौस मांगा करो। (१)

जन्नत में बहने वाली चार नहरें पानी, दूध, शराब और शहद की होंगी। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हैः

فِيهَآ أَنْهَٰرٌ مِّن مَّآءٍ غَيْرِ ءَاسِنٍ وَأَنْهَٰرٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُۥ وَأَنْهَٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّٰرِبِينَ وَأَنْهَٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى۔ (سورة محمد: ١٥)

तर्जुमाः उसमें नहरें हैं पानी की जिसमें बू नहीं होगी और नहरें हैं दूध की जिसका मज़ा फिरा नहीं, और नहरें हैं शराब की जिसमें मज़ा है पीने वालों के लिए और नहरें हैं शहीद की झाग उतारा हुआ।

जन्नत के बाज़ार

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में एक बाज़ार होगा जहाँ वे हफ़्ते में एक बार जाया करेंगे। उत्तरी हवा चलेगी और उनके चेहरों और कपड़ों में (मुश्क वग़ैरह की) ख़ुशबू बसा देगी जिससे वे और ज़्यादा

(१) तिर्मिज़ी शरीफ़

हसीन व जमील हो जाएंगे। अपने घर वालों के पास पहुँचेंगे और पहले से ज़्यादा हसीन व ख़ूबसूरत होंगे तो उनकी बीवियाँ उनसे कहेंगीः खुदा की क़सम! आप लोग हमसे जुदा होने के बाद तो और ज़्यादा हसीन व ख़ूबसूरत बन गए। तो वे उनसे कहेंगेः खुदा की क़सम! तुम भी तो हमारे बाद और ज़्यादा हसीन व ख़ूबसूरत हो गई हो। (१)

अ़ल्लामा नववी ने लिखा है कि जन्नत में जन्नतियों के लिए एक इकट्ठा होने की जगह होगी जहाँ हफ़्ता भर की मिक़दार में एक बार इकट्ठा हुआ करेंगे। वहाँ हक़ीक़त में हफ़्ता न होगा इसलिए कि वहाँ चाँद-सूरज और रात-दिन न होंगे। दिन-रात का वक़्त अनवारात के पर्दे डालने और उनके उठाने से मालूम होगा जैसा कि बाज़ हदीसों से मालूम होता है। उससे जुमा वग़ैरह का अन्दाज़ा होगा और अल्लाह की ज़ियारत और अपने भाईयों से मुलाक़ात वग़ैरह के वक़्त का अन्दाज़ा करेंगे। उनका हुस्न व ख़ूबसूरती उस हवा की वजह से बढ़ी होगी या उनकी ख़ूबसूरती का अ़क्स पड़ने या दर्जों की तरक़्क़ी और फ़ज़्ले खुदावन्दी की वजह से।

जन्नतियों की सिफ़तें

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः जन्नत में जो पहली जमाअ़त दाख़िल होगी उनके चेहरे चौदहवीं के चाँद की तरह रोशन होंगे। फिर उनके बाद दाख़िल होने वाले आसमान पर चमकने वाले रोशन-तरीन सितारे की मानिन्द होंगे। उन सबके दिल एक आदमी के दिल की तरह होंगे, न उनमें इख़्तिलाफ़ होगा न बुग़्ज़ होगा। उनमें से हर शख़्स को दो बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें मिलेंगी जिनकी पिंडलियों

(१) मुस्लिम शरीफ़

का गूदा लताफ़त की वजह से हड्डी और गोश्त के बाहर से नज़र आ रहा होगा। जन्नती सुबह व शाम अल्लाह जल्ल शानुहू की पाकी बयान करेंगे। न बीमार होंगे न पेशाब की हाजत होगी, न पाख़ाने की हाजत होगी, न थूकने की न नाक से गंदगी आयेगी। उनके बरतन सोने-चाँदी के होंगे। उनकी कंघियां सोने की होंगी। उनकी अंगीठियों का ईंधन ऊद होगा। उनका पसीना मुश्क की तरह ख़ुशबूदार होगा। वे सब हम-उम्र एक जैसे होंगे। अपने जद्दे अमूजद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की शक्ल पर आसमान में साठ हाथ के बराबर होंगे। (१)

हूर उस गोरी औ़रत को कहते हैं जिसकी आँखों का सफ़ेद हिस्सा निहायत सफ़ेद और स्याह हिस्सा निहायत स्याह हो। और अगर इसी कैफ़ियत के साथ आँखें भी बड़ी-बड़ी हों तो हुस्न और बढ़ जाता है। हर मोमिन की इस तरह की दो बीवियाँ मिलेंगी और इसके अ़लावा दूसरी तरह की और बीवियाँ भी होंगी। बाज़ हज़रात ने कहा है कि हर क़िस्म की दो-दो मिलेंगी। दुनिया में अंगीठी में कोयला, लकड़ी वग़ैरह डालकर आग जलाते हैं लेकिन जन्नत में उसके बजाय उनका ईंधन ऊद होगा। उनकी उम्रें एक जैसी तीस-तैंतीस साल होंगी जैसा कि दूसरी रिवायतों में आया है।

जन्नत में अल्लाह की तारीफ़ व पाकी बयान करना!

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया हैः जन्नत वाले वहाँ खाएं पिएंगे। न थूक आएगा, न पेशाब, न पाख़ाना न नाक की गंदगी। पूछाः खाने (के

(१) बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़

फुज़ला) का क्या होगा? (कैसे हज़्म होगा?) फरमायाः डकार आएगी और मुश्क की खुशबू वाला पसीना (उससे खाना हज़्म हो जाएगा) उनके लिए सुब्हानल्लाह और अल्हम्दु लिल्लाह को इस तरह आसान कर दिया जाएगा जिस तरह तुम्हारे लिए साँस लेने को आसान किया गया है। (१)

यानी जैसे दुनिया में साँस लेना तुम्हारे लिए आसान है। हर वक़्त हर शख़्स साँस लेता है उसकी वजह से उसपर कोई मशक़्क़त लाज़िम नहीं आती। न उससे थकता है न कोई मश्ग़ला या धन्धा साँस लेने से रोकता है। इसी तरह वहाँ तुम सुब्हानल्लाह अल्हम्दु लिल्लाह पढ़ोगे और फ़रिश्तों की तरह न थकोगे न आ़जिज़ होगे। या यह कि यह तस्बीह व तकबीर साँस की तरह तुम्हारा लाज़िमी वस्फ़ (ख़ूबी और सिफ़त) बन जाएगा।

नाज़ व नेमत की जगह

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया हैः जो शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा नेमत में रहेगा, कभी ख़स्ता-हाल न होगा। न उसके कपड़े पुराने होंगे न उसकी जवानी ढलेगी। (२)

जन्नत 'दारुल-बक़ा' यानी हमेशा रहने की जगह है इसलिए वहाँ न कपड़े पुराने होंगे न बुढ़ापा आएगा और न ही गुरबत, फ़क्ऱ व फ़ाक़ा और ख़स्ता-हाली।

जन्नत में बीमारी न होगी

हज़रत अबू सईद व हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से

(१) मुस्लिम शरीफ़ (२) मुस्लिम शरीफ़

रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः एक पुकारने वाला आवाज़ लगाएगा कि तुम्हारे लिए यह तय है कि हमेशा सेहत-मन्द रहोगे कभी बीमार न होगे, और हमेशा ज़िन्दा रहोगे कभी मौत न आएगी, हमेशा जवान रहोगे कभी बुढ़ापा नहीं आएगा। और तुम्हारे लिए नेमत ही नेमत होगी कभी ख़स्ता-हाली न होगी। (१)

सुब्हानल्लाह! कितनी बड़ी नेमत है कि सेहत भी हो, मौत का ग़म भी न हो और जवानी भी हो और राहत व आराम व नेमतें। इनका मजमूआ जिसको मिल जाए उसे और क्या चाहिए? दुनिया में किसी के पास दौलत है तो सेहत नहीं, सेहत है तो दौलत नहीं, जवानी है तो माल व दौलत नहीं, माल व दौलत है तो जवानी नहीं। और अगर मान लो ये सब चीज़ें किसी के पास दुनिया में इकट्ठा हो भी जाएं तो किसी वक़्त भी ख़त्म हो सकती हैं, मौत बहर हाल किसी भी वक़्त आ सकती है। जवानी वक़्ती होती है लेकिन जन्नत में ये सब चीज़ें हमेशा के लिए होंगी वहाँ मौत को मार दिया जाएगा अब कभी मौत नहीं आएगी।

जन्नत के बालाख़ाने

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जन्नती ऊपर के बालाख़ाने वालों को इस तरह देखेंगे जिस तरह तुम पूरब या पश्चिम के उस सितारे को देखते हो जो उफ़ुक़ (आसमान के किनारे) में डूबता है। यह उनके दर्जों के फ़र्क़ की वजह से होगा। सहाबा ने अर्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के रसूल! क्या अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के

(१) मुस्लिम शरीफ

बालाख़ाने होंगे जिन तक और कोई नहीं पहुँच सकेगा? फ़रमाया: क्यों नहीं! क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, ये वे लोग होंगे जो अल्लाह तआला पर ईमान लाए और उसके रसूल की तसदीक़ की। (१)

लिखा है कि जन्नत के दर्जों में सबसे ऊँचे दर्जे साबिक़ीन अव्वलीन (जो सबसे पहले ईमान लाये होंगे) के लिए होंगे, और दरमियाने वाले मियाना-रवी इख़्तियार करने वालों के लिए और निचले वाले उन लोगों के लिए होंगे जिन्होंने नेकियाँ और गुनाह दोनों किए होंगे।

नरमदिल जन्नती

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जन्नत में कुछ क़ौमें दाख़िल होंगी उनके दिल परिन्दों के दिल की तरह नर्म और रक़ीक़ होंगे। (२)

बाज़ हज़रात ने कहा है कि परिन्दों की तरह नरमदिल होंगे। बाज़ हज़रात ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से दिल काँप रहे होंगे जैसे परि[illegible] कमज़ोर दिल के होते हैं। बाज़ हज़रात ने कहा है कि अल्लाह तआला पर तवक्कुल व भरोसा करने में, क्योंकि परिन्दे सुबह ख़ाली पेट होते हैं शाम को खुदा उन्हें रिज़्क़ दे देता है।

अल्लाह की रिज़ा

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला जन्नत में जन्नतियों से फ़रमाएंगे: ऐ जन्नतियो! वे कहेंगे: ऐ परवर्दिगार हम हाज़िर

(१) बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़ (२) मुस्लिम शरीफ़

हैं। तमाम ख़ैर आपके क़ब्ज़े में है। फ़रमाएंगेः क्या तुम लोग ख़ुश हो? वे अर्ज़ करेंगेः ऐ रब! हम क्योंकर ख़ुश न होंगे जबकि आपने हमें वह कुछ अता फ़रमाया है जो अपनी मख़्लूक़ में से किसी को अता नहीं किया। फ़रमाएंगेः क्या मैं तुम्हें इससे अफ़ज़ल व आला चीज़ न दूँ? वे अर्ज़ करेंगेः परवर्दिगार! इससे बेहतर क्या चीज़ होगी? फ़रमाएंगेः मैं तुमसे राज़ी रहूँगा, अब इसके बाद कभी नाराज़ नहीं हूँगा। (१)

लिखा है कि इस हदीस से मालूम हुआ कि जन्नत में दाख़िले से बढ़कर इनाम अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी व रज़ामन्दी होगी। उस रज़ामन्दी में अल्लाह तआला की मुलाक़ात और नेमत की दूसरी तमाम क़िस्में शामिल होंगी।

मामूली दर्जे के जन्नती का ठिकाना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में तुममें से किसी शख़्स का सबसे कम दर्जे का ठिकाना यह होगा कि उससे फ़रमाएंगेः तमन्ना करो, वह तमन्ना करेगा। अल्लाह तआला उससे फ़रमाएंगेः क्या तुमने तमन्ना कर ली? वह कहेगा जी हाँ! फ़रमाएंगेः तुझे उसका दोगुना दिया जाता है जो तूने तमन्ना की है। (२)

जन्नत की चौखट

हज़रत उतबा बिन ग़ज़वान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः हमसे ज़िक्र किया गया है कि पत्थर जहन्नम की एक तरफ़ से फेंका जायेगा तो वह जहन्नम में सत्तर साल तक गिरता रहेगा लेकिन उसकी तह तक नहीं पहुँच सकेगा। ख़ुदा की क़सम उस जहन्नम को भर दिया

(१) बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़ (२) मुस्लिम शरीफ़

जाएगा (यानी काफिरों, मुश्रिकों और बुत-परस्तों से) और हमसे यह भी बयान किया गया कि जन्नत की दो चौखटों के दरमियान का फ़ासला चालीस साल की दूरी के बराबर होगा, लेकिन उसपर एक ऐसा वक़्त भी आएगा कि वह भीड़ और मजमे की वजह से तंग पड़ जाएगा। (१)

अल्लाह तआ़ला हम सबको जहन्नम से बचाए और अपने फ़ज़्ल व करम से जन्नत का हक़दार बनाए।

जन्नत की ईंट-गारा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः मैंने अ़र्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के रसूल! मख़्लूक़ को किस चीज़ से पैदा किया गया है? फ़रमायाः पानी से। हमने पूछाः जन्नत किस चीज़ से तामीर की गई है? फ़रमायाः एक ईंट सोने की होगी एक ईंट चाँदी की, और उसका गारा खुशबूदार मुश्क का। और संगरेज़े (पत्थर के टुकड़े) मोती और याक़ूत और मिट्टी ज़ाफ़रान की होगी। जो वहाँ दाख़िल होगा नेमत में रहेगा कभी ख़स्ता-हाल न होगा। हमेशा रहेगा मौत नहीं आएगी और न उनके कपड़े पुराने होंगे न उनकी जवानी ख़त्म होगी। (२)

दानिश्वरों का इसमें इख़्तिलाफ़ है कि अल्लाह तआ़ला ने जिस्म वाली चीज़ों में से सबसे पहले किस चीज़ को पैदा किया? अक्सर हज़रात की राय यह है कि वह पानी है इसलिए कि इसमें हर चीज़ की सलाहियत है। पानी को कसीफ़ और गाढ़ा करके जमाकर उससे ज़मीन बनाई और आग व हवा पानी को लतीफ़ करके बनाया इसलिए कि पानी लताफ़त के बाद हवा बन जाता है और पानी के निचोड़ से आग बनी और आग के धुएं से आसमान बना। बाज़ हज़रात ने यह कहा है

(१) मुस्लिम शरीफ (२) तिर्मिज़ी शरीफ़, मुस्नद अहमद, दारमी

कि पानी से नुत्फ़ा मुराद है, इस सूरत में मख़्लूक़ से ज़िन्दा मख़्लूक़ मुराद होगी। दुनिया में इमारत ईंट, गारे और लकड़ी से बनाई जाती है, जन्नत में सोने-चाँदी से बनेगी और गारा मिट्टी के बजाय मुश्क होगा।

जन्नत के पेड़ों का तना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है: जन्नत के हर पेड़ का तना सोने का होगा। (१)

जन्नत के दर्जे

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है: जन्नत में सौ दर्जे हैं, हर दो दर्जों के दरमियान सौ साल की दूरी का फ़ासला है। (२)

सौ के अ़दद से मख़्सूस यही तादाद मुराद नहीं है बल्कि यह बतलाना है कि बहुत से दर्जे हैं। ज़्यादती ज़ाहिर करने के लिए सौ, सत्तर वग़ैरह के अ़दद को इस्तेमाल किया जाता है। ये बुलन्द दर्जे लोगों के अपने-अपने आमाल की वजह से मिलेंगे।

जन्नत के दर्जों की वुसअ़त

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि जन्नत के सौ दर्जे हैं, अगर तमाम आ़लम वाले उनमें से किसी एक में इकट्ठा हो जाएं तो भी वह उनके लिए काफ़ी हो जाए। (३)

इससे जन्नत की वुसअ़त बयान करना मक़सूद है। हर जन्नती को

(१) तिर्मिज़ी शरीफ़। (२) इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को रिवायत किया है और इसको हसन ग़रीब फ़रमाया है। (३) इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को रिवायत किया है और इसको ग़रीब फ़रमाया है।

निगाह की हद तक महल और बाग़ात मिलेंगे।

उन्हीं से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अल्लाह जल्ल शानुहु के फरमान मुबारकः

وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ. (الواقعة:٣٤)

तर्जुमाः 'और ऊँचे फर्श होंगे' के बारे में फरमायाः उनकी बुलन्दी ऐसी होगी जैसी आसमान व ज़मीन के दरमियान है, पाँच सौ साल की दूरी के बराबर। (१)

यानी वे बिस्तर तरतीब से लगे होंगे या मसहरियों पर बिछे होंगे। बड़े नफीस व कीमती होंगे। बाज़ हज़रात ने (फुरुश) से जन्नत की औ़रतें मुराद ली हैं, यानी जन्नत की औ़रतें हुस्न व ख़ूबसूरती में दुनियावी औ़रतों से कहीं बरतर व ऊँची होंगी।

जन्नत की पोशाक

उन्हीं से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः क़ियामत के दिन जो पहली जमाअ़त जन्नत में दाख़िल होगी उनके चेहरे की चमक चौदहवीं रात के चाँद की तरह होगी। और दूसरी जमाअ़त आसमान के चमकदार-तरीन सितारे की तरह रोशन व चमकदार होगी। उनमें से हर शख़्स को दो बीवियाँ (मख़्सूस क़िस्म की) मिलेंगी उनमें से हर बीवी पर सत्तर पोशाकें होंगी जिनके पीछे से उनकी पिंडली (की हड्डी) का गूदा नज़र आएगा। (२)

यानी उनका लिबास ऐसा बारीक और शफ़्फ़ाफ़ होगा कि उससे उनका हुस्न फूट-फूटकर निकलेगा। वे खुद भी निहायत नाज़ुक मिज़ाज और लतीफ़ होंगी और उनका लिबास भी निहायत लतीफ़ होगा।

(१) इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को रिवायत किया है और इसको ग़रीब फ़रमाया है।

(२) तिर्मिज़ी शरीफ़

जन्नत वालों की कुव्वत व ताकत

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मोमिन को जन्नत में इतनी-इतनी औरतों से हमबिस्तरी की कुव्वत दी जाएगी। अर्ज़ किया गयाः ऐ अल्लाह के रसूल! क्या उसमें इतनी ताक़त होगी? फ़रमायाः सौ आदमियों की ताक़त दी जाएगी। (१)

जन्नतियों के कंगन

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल ने फ़रमायाः अगर जन्नत की नेमतों में से एक नाखुन के बराबर भी (दुनिया में) ज़ाहिर हो जाए तो पूरब व पश्चिम के दरमियान सब हिस्सा रोशन व मुज़ैयन हो जाए। और अगर जन्नत वालों में से कोई शख़्स झांक ले और उसका कंगन ज़ाहिर हो जाए तो उसकी रोशनी सूरज की रोशनी को इस तरह ख़त्म कर दे जिस तरह सूरज सितारों की रोशनी को ख़त्म कर देता है। (२)

ज़ाहिर है कि वहाँ की चीज़ों की चमक-दमक ऐसी होगी कि उनके सामने सूरज की रोशनी मांद पड़ जाए, जैसे दुनिया में सूरज के सामने चाँद सितारे मांद पड़ जाते हैं और साठ या चालीस वोल्ट का बल्ब हज़ारों वोल्ट के सामने टिमटिमाने लगता है।

जन्नतियों का हुस्न व ख़ूबसूरती

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हैः जन्नत वाले बेबाल व

(१) तिर्मिज़ी शरीफ़ (२) इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को रिवायत किया है और इसको ग़रीब फ़रमाया है।

बेदाढ़ी और सुरमगीन आँखों वाले होंगे। उनकी जवानी ख़त्म नहीं होगी न उनके कपड़े पुराने होंगे। (१)

यानी उनके जिस्म पर फ़ालतू बाल न होंगे। वे बेदाढ़ी वाले जवान होंगे, बग़ैर सुरमा लगाए उनकी आँखें हमेशा सुरमगीं रहेंगे।

जन्नत वालों की उम्रें

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः जन्नत वाले जन्नत में इस हालत में दाख़िल होंगे कि उनके जिस्म बेबाल वाले और वे बेदाढ़ी वाले और सुरमगीं तीस या तैंतीस साल के होंगे। (२)

तीस तैंतीस साल की उम्र जवानी की भरपूर उम्र और क़ुव्वत के कमाल और पुख़्तगी का ज़माना होता है। वहाँ चूँकि हर चीज़ कामिल होगी इसलिए मोमिनों की उम्र भी यही होगी।

सिद्रतुल-मुन्तहा

हज़रत असमा बिन्ते अबी बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रतामी हैं: मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना, आपने सिद्रतुल-मुन्तहा का तज़किरा किया, फ़रमायाः माहिर घुड़सवार उसकी टहनियों के साय में सौ साल सफ़र करेगा, या यह फ़रमायाः कि सवार आदमी उसके साय में सौ साल तक चलता रहेगा, उसमें सोने के परवाने हैं, उसके फल मटके के बराबर हैं। (३)

सिद्रतुल-मुन्तहा सातवें आसमान पर अ़र्श की दाईं जानिब एक पेड़ है उसको मुन्तहा इसलिए कहते हैं कि वह जन्नत के मुन्तहा (अख़ीर) में है, या इसलिए कि उससे आगे कोई न जा सका। फ़रिश्तों

(१) तिर्मिज़ी शरीफ़, दारमी शरीफ़ (२) तिर्मिज़ी शरीफ (३) इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को रिवायत किया है और इसको ग़रीब फ़रमाया है।

वग़ैरह का इल्म भी वहीं ख़त्म हो जाता है, उसके बाद कया है उसे अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई नहीं जानता। परवानों के बारे में बाज़ हज़रात ने यह कहा है कि उससे फ़रिश्ते मुराद हैं जिनके पर इस तरह चमक रहे होंगे जैसे परवानों के पर चमकते हैं।

हौज़े कौसर

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कौसर के बारे में दरियाफ़्त किया गया कि वह क्या चीज़ है? फ़रमायाः वह एक नहर है जो अल्लाह तआ़ला ने मुझे जन्नत में अ़ता फ़रमाई है। वह दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठी है। उसमें ऐसे परिन्दे हैं जिनकी गर्दनें ऊँटों की गर्दनों की तरह हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः ये परिन्दे तो बड़े लज़ीज़ होंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः उनके खाने वाले उनसे भी अच्छे हैं। (१)

यह वही हौज़े कौसर है जिसका तज़किरा क़ुरआन करीम में सूरः कौसर में मौजूद है। उसपर मोमिन जाएंगे, सितारों से ज़्यादा वहाँ जाम रखे होंगे। जो वहाँ से एक बार पी लेगा फिर कभी प्यासा न होगा। उस नहर पर आने वाले ऐसे परिन्दे होंगे जो निहायत पुर-गोश्त और लज़ीज़ होंगे, और क्यों न हों जबकि यह रब्बे ज़ुलजलाल की मेज़बानी है।

जन्नत के घोड़े

हज़रत बरीदा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि एक साहिब ने अ़र्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जन्नत में घोड़े भी होंगे?

(१) तिर्मिज़ी शरीफ़

फ़रमायाः अगर अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया तो तुम अगर यह चाहोगे कि वहाँ तुम्हें सुर्ख़ मोती के ऐसे घोड़े पर सवार कर दिया जाए जो तुम्हें जन्नत में वहाँ लेकर उड़े जहाँ तुम चाहो तो यह भी हो जाएगा। एक साहिब ने आपसे पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जन्नत में ऊँट भी होंगे? फ़रमायाः उनसे आपने वह बात न फ़रमाई जो उनके दूसरे साथी से फ़रमाई थी, यह फ़रमायाः अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे तो तुम्हें वह सब मिलेगा जो तुम्हारा नफ़्स चाहेगा और तुम्हें अच्छा लगेगा। (१)

यानी जन्नत में इन्सान जो माँगेगा वह उसे मिलेगा। और जन्नत की लाजवाब सवारियाँ तुम्हें दुनिया की सवारियों से बेनियाज़ कर देंगी।

हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि एक देहाती नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के रसूलः मुझे घोड़ा पसन्द है क्या जन्नत में घोड़ा होगा? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः अगर तुम्हें जन्नत में दाख़िल कर दिया गया तो तुम्हारे पास याक़ूत का बना हुआ एक घोड़ा लाया जाएगा जिसके दो पर लगे होंगे, तुम्हें उसपर सवार कर दिया जाएगा, फिर तुम जहाँ चाहोगे वह तुम्हें लेकर उड़ता फिरेगा। (२)

जन्नत के घोड़े दुनियावी घोड़ों की तरह न होंगे बल्कि वे याक़ूत के बने हुए उड़ने वाले परिन्दे होंगे, देखते ही देखते इधर से उधर पहुँचा देंगे।

---

(१) तिर्मिज़ी शरीफ़ (२) इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और इसकी सनद को ग़ैर क़वी बताया है। इस हदीस के एक रावी अबू सोरा को ज़ईफ़ क़रार दिया गया है।

जन्नतियों की सफ़ें

हज़रत बरीदा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जन्नतियों की एक सौ बीस सफ़ें होंगी जिनमें से अस्सी सफ़ें इस उम्मत की और बाक़ी चालीस सफ़ें और दूसरी उम्मतों की होंगी। (१)

यह अल्लाह तआ़ला का इस उम्मत पर अ़ज़ीम इनाम और बहुत बड़ा फ़ज़्ल व करम है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मत की बड़ी तादाद को जन्नत का हक़दार बनाया और अपने महबूब की उम्मत की अक्सरियत को जहन्नम की ज़िल्लत और रुस्वाई से नजात दी।

जन्नत का दरवाज़ा

हज़रत सालिम अपने वालिद माजिद हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः मेरी उम्मत का वह दरवाज़ा जिससे वे जन्नत में दाख़िल होंगे उसकी चौड़ाई बेहतरीन घुड़सवार की तीन दिन की दूरी के बराबर होगा। फिर भी उम्मते मुहम्मदिया उसपर इतना हुजुम करेगी कि क़रीब होगा कि भीड़ की ज़्यादती की वजह से उनके कांधे उखड़ जाएँ। (२)

यानी ऐसा माहिर घुड़सवार जो घुड़दौड़ से ख़ूब वाक़िफ़ हो, वह अगर अपने घोड़े को तीन दिन या तीन साल तक दौड़ाता रहे तो जितनी दूरी तक वह तीन दिन या तीन साल में पहुँचेगा उससे भी बड़ी चौड़ाई वाला जन्नत का दरवाज़ा होगा। मुराद यह मख़्सूस मिक़दार

---

(१) इसको इमाम तिर्मिज़ी और दारमी ने रिवायत किया है, और इमाम बैहक़ी ने किताब 'अल-बअ़स वन्नुशूर' में बयान किया है। (२) इमाम तिर्मिज़ी ने इस रिवायत को नक़ल किया है और इसको ज़ईफ़ करार दिया है।

(मात्रा) नहीं बल्कि बतलाना यह मक़सूद है कि वह दरवाज़ा निहायत चौड़ा होगा लेकिन अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से मेरी उम्मत के जन्नत के हक़दार इतने ज़्यादा होंगे कि वह दरवाज़ा भी उनके लिए तंग पड़ जाएगा और भीड़ की ज़्यादती की वजह से काँधा मिला जा रहा होगा।

जन्नत में ख़रीद व बेच

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया हैः जन्नत में एक ऐसा बाज़ार होगा जिसमें ख़रीद व बेच न होगी, वहाँ सिर्फ़ मर्दों और औ़रतों की तसवीरें होंगी। इन्सान जिस सूरत को पसन्द करेगा उसको वही दे दी जाएगी। (१)

यानी वहाँ दुनिया की तरह ख़रीद व बेच न होगी बल्कि इससे या तो यह मुराद है कि इन्सान को उन सूरतों में से जो सूरत पसन्द आएगी इन्सान को वैसा ही बना दिया जाएगा, या इससे यह मुराद है कि लिबास, पोशाक और ताज व जवाहिरात पेश होंगे, जिस क़िस्म के उसे पसन्द होंगे वही उसे पहना दिए जाएंगे। इसी तरह औ़रतें जो शक्ल व सूरत पसन्द करेंगी उनको वैसा ही बना दिया जाएगा। जिस क़िस्म के लिबास और ज़ेवर का इन्तिख़ाब (चुनाव) करेंगी उन्हीं उससे सजा दिया जाएगा।

हज़रत सईद बिन मुसैयब रहमतुल्लाहि अ़लैहि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मिले तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः अल्लाह तआला से यह दुआ माँगो कि मुझे और तुम्हें जन्नत के बाज़ार में जमा फ़रमा दे, हज़रत सईद ने अ़र्ज़ कियाः क्या वहाँ बाज़ार होगा? फ़रमायाः जी हाँ! मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व

(१) इमाम तिर्मिज़ी ने इस रिवायत को नक़ल किया है और इसको ग़रीब क़रार दिया है।

सल्लम ने यह ख़बर दी है कि जन्नती जब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो अपने-अपने आमाल के मुताबिक़ जन्नत में बुलन्द दर्जों में उतरेंगे। फिर दुनियावी हफ़्ता भर की मिक़दार गुज़रने पर अपने रब की ज़ियारत करेंगे। उनके सामने उसका अ़र्श ज़ाहिर होगा और अल्लाह तआला जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में तजल्ली फ़रमाएंगे। जन्नतियों के लिए नूर मोतियों, याक़ूत, ज़बरजद, सोने और चाँदी के मिंबर रख दिए जाएंगे उनमें कमतर दर्जे वाले भी (हालाँकि उनमें कम दर्जे का कोई भी न होगा) मुश्क और काफ़ूर के टीलों पर बैठे होंगे। वे यह महसूस न करेंगे कि कुर्सियों और मिंबर पर बैठने वाले उनसे बड़े मक़ाम के मालिक हैं। (ताकि किसी ग़म व मलाल में गिरफ़्तार न हों)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः मैंने अ़र्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम अपने परवर्दिगार को देखेंगे? फ़रमायाः क्या तुम चौदहवीं रात के चाँद और सूरज़ के देखने में कुछ शक व शुब्हा करते हो? हमने कहाः जी नहीं! फ़रमायाः इसी तरह तुम अपने परवर्दिगार के देखने में भी कोई शक व शुब्हा नहीं करोगे। और उस मज्लिस में मौजूद हर शख़्स से अल्लाह तआ़ला (बिला पर्दे और बिला तर्जुमान) कलाम फ़रमाएंगे, यहाँ तक कि उनमें से एक आदमी से फ़रमाएंगेः

फ़लाँ बिन फ़लाँ! क्या तुम्हें याद है फ़लाँ-फ़लाँ दिन तुमने यह बात कही थी और उसे बाज़ दुनियावी उज़्र व ख़ियानतें याद दिलाएंगे। वह शख़्स कहेगाः परवर्दिगार क्या आपने मेरी मग़फ़िरत न फ़रमा दी थी? फ़रमाएंगे क्यों नहीं! मेरी मग़फ़िरत की वजह से ही तुम इस मर्तबा तक पहुँचे हो। वे इस हालत ही में होंगे कि एक बादल ऊपर से उन्हें घेर लेगा और उनपर ऐसी खुशबू की बारिश करेगा कि वैसी खुशबू

उन्होंने कभी न सूंघी होगी। अल्लाह जल्ल शानुहू इर्शाद फरमाएंगे: जाओ जाकर देखो मैंने तुम्हारे इकराम व सम्मान के लिए कैसी-कैसी नेमतें तैयार कर रखी हैं, वहाँ से जो लेना चाहो ले लो। हम एक ऐसे बाज़ार में आएंगे जिसे फ़रिश्तों ने घेर रखा होगा। वहाँ ऐसी-ऐसी नेमतें होंगी कि उस जैसी नेमतें किसी आँख ने न देखी होंगी न किसी कान ने उनके बारे में सुना होगा और न किसी दिल पर उनका ख़्याल भी गुज़रा होगा। हमारे लिए वहाँ से वे चीज़ें उठा ली जाएंगी जो हम पसन्द करेंगे, वहाँ ख़रीद व फ़रोख़्त न होगी।

उस बाज़ार में जन्नती एक दूसरे से मिलेंगे। फ़रमाया: एक बड़े दर्जे वाला अपने से कम दर्जे वाले से मिलेगा हालाँकि वहाँ कोई भी कमतर न होगा। उस लिबास पोशाक हैरान कर देगा, अभी उसका यह ख़्याल ख़त्म भी न होने पायेगा कि उसे महसूस होगा कि उसका लिबास उस शख़्स से ज़्यादा बेहतर है। यह इसलिए कि वहाँ कोई शख़्स ग़मगीन न होगा। फिर हम अपने-अपने ठिकानों की तरफ़ चले जाएंगे। वहाँ हमारी बीवियाँ हमें खुश आमदीद कहेंगे (यानी स्वागत करेंगी) और कहेंगी: आप हमारे पास से जाते वक़्त इतने ख़ूबसूरत न थे अब तो पहले से बहुत ज़्यादा ख़ूबसूरत हो गए हैं। हम कहेंगे: आज हम अपने परवर्दिगार जुलजलाल के साथ बैठे थे इसलिए हमारा इतना ख़ूबसूरत होना हमारे लिए बिल्कुल दुरुस्त है। (१)

जमाले हमनशीं दर मन असर कर्द

व गरना हमा ख़ाकम कि हस्तम

जन्नत वालों के ख़ादिम व बीवियाँ

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह

(१) इमाम तिर्मिज़ी ने इस रिवायत को नक़्ल किया है और इसको ग़रीब क़रार दिया है।

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है: जन्नत में कम से कम दर्जे वाले को अस्सी हज़ार ख़ादिम और बहत्तर बीवियाँ मिलेंगी और उसके लिए मोती, ज़बरजद व याकूत का एक इतना बड़ा कुब्बा लगा दिया जाएगा जितना फ़ासला (मुल्क शाम के शहर) जाबिया और (मुल्क यमन के शहर) सुनआ़ के दरमियान है।

जन्नती का हर तरह से इकराम होगा जैसे दुनिया में ख़ादिम और नौकर-चाकर इन्सान की बड़ाई, वजाहत और मालदारी की अ़लामत (निशानी) होते हैं इसी तरह जन्नतियों के सम्मान के लिए अल्लाह तआ़ला उन्हें इतने ख़ादिम अ़ता फ़रमाएंगे और उनके दिल खुश करने के लिए इतनी बीवियाँ होंगी।

जन्नतियों की उम्र

इसी सनद से रिवायत किया गया है। फ़रमाया: जन्नतियों में से हर छोटे-बड़े को जन्नत में तीस साल का जवान बना दिया जाएगा। वह हमेशा इस उम्र के रहेंगे कि कभी इससे ज़्यादा उम्र के न होंगे और यही हाल दोज़ख़ियों का भी होगा, यानी उनकी जवानी, बदन के अंग, बालों वग़ैरह में से किसी चीज़ में बदलाव नहीं आएगा।

जन्नतियों के ताज

इसी सनद के रिवायत है। फ़रमाया: उनके (सरों पर) ऐसे ताज होंगे जिनमें मामूली सा मोती भी ऐसा चकमदार होगा जिससे पूरब व पश्चिम के दरमियान का आ़म हिस्सा रोशन हो जाए।

यह सिला होगा उनकी लिल्लाहियत, इताअ़ते खुदावन्दी, रियाज़त और मुजाहदे और नेक आमाल का, और सबसे बड़ी वजह अल्लाह जल्ल शानुहु का फ़ज़्ल होगा कि उसने इन्सान को उस जन्नत का

अहल बनाया और तौफ़ीक़ दी और फिर उस सम्मान व इकराम से नवाज़ा।

जन्नती के यहाँ गर्भ और पैदाइश

इसी सनद से यह भी रिवायत है। फ़रमायाः मोमिन जन्नत में जब बच्चे की तमन्ना करेगा तो उसका गर्भ और बच्चे की पैदाइश और उम्र के कमाल को पहुँचना जैसे ही चाहेगा सब ज़रा सी देर में हो जाएगा।

यानी वहाँ हर चीज़ हुक्म और इशारे के ताबे होगी। दुनिया की तरह धीरे-धीरे कोई काम न होगा, दिल में ख़्याल आया और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसकी तकमील हो गई।

इसहाक़ बिन इब्राहीम इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि मोमिन जन्नत में जब बच्चे की ख़्वाहिश करेगा तो ज़रा सी देर में हो जाएगा लेकिन वह यह तमन्ना ही न करेगा। (१)

हूरों के जमा होने की जगह

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जन्नत में हूरों की एक जमा होने की जगह होगी। वे ऐसी प्यारी आवाज़ से नीचे दिए गए शे'र पढ़ेंगी जैसी आवाज़ किसी ने कभी भी न सुनी होगी। कहेंगीः

نحن الخالدات فلا نبيد ونحن الناعمات فلا نبأس

तर्जुमाः हम हमेशा रहने वालियाँ हैं कभी ख़त्म न होंगी। हम नाज़ व नेमत में रहने वालियाँ हैं कभी ख़स्ता-हाल न होंगी।

ونحن الراضيات فلا نسخط طوبىٰ لمن كان لنا وكنا له

(१) इमाम तिर्मिज़ी ने इस रिवायत को नक़ल किया है और इसको ग़रीब क़रार दिया है।

तर्जुमाः हम राज़ी व खुश रहने वालियाँ हैं कभी नाराज़ न होंगी। भलाई हो उसके लिए जो हमारा बन गया और हम उसके हो गए।

यानी हम दुनियावी औरतों की तरह नहीं जिनका हुस्न आ़रिज़ी व फ़ानी, जिनके नाज़ व करिश्मे वक़्ती और खुशनूदी रेत की चमक होती है, उम्र ढलने के साथ हुस्न व ख़ूबसूरती रुख़्सत और वक़्त गुज़रने के साथ मिज़ाज चिड़चिड़ा और मर्ज़ी के ख़िलाफ़ बात होने पर नाक-भौं चढ़ाना, नहीं! हम हमेशा-हमेशा सदाबहार जवान रहेंगी, हसीन और ख़ूबसूरत रहेंगी, हमेशा अपने शौहरों की आँखों की ठन्डक बनेंगी और उनसे कभी नाराज़ न होंगी। हर वक़्त उनके लिए आंखें बिछाए रहेंगी। वाक़ई वे जिसकी होंगी वह बड़ा खुशनसीब होगा और जो उनके हिस्से में आएगा वह बड़ा सआ़दत मन्द होगा। और यह उनकी खुश-क़िस्मती होगी। एक रिवायत में है कि वे यह कहेंगी कि हम ऐसी राज़ी रहने वालियाँ हैं कि कभी नाराज़ न होंगी और ऐसी हमेशा रहने वालियाँ हैं कि कभी कूच न करेंगी। एक रिवायत में है कि हूरें जन्नत में यह पढ़ेंगी कि हम निहायत ख़ूबसूरत गोरी-गोरी हूरें हैं, हमें निहायत सम्मानित व मुकर्रम शौहरों के लिए छुपाकर रखा गया है।

चार दरिया

हज़रत हकीम बिन मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया हैः जन्नत में पानी, शहद, दूध और शराब के बड़े-बड़े दरिया होंगे, बाद में फिर उनमें से नहरें निकलेंगी। (१)

यानी जन्नती जब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो उनसे नहरें निकल-निकल कर जन्नतियों के महलों में पहुँचेंगी। हर शख़्स को चारों

(१) तिर्मिज़ी शरीफ़, दारमी शरीफ़, अ़न मुआ़विया।

नहरों से सैराब किया जाएगा और चारों नहरें हर शख़्स के क़ब्ज़े में रहेंगी।

जन्नत की औ़रत

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जन्नती जन्नत में एक जगह पर वहाँ से हटने से पहले सत्तर तकियों पर टेक लगाए होगा। फिर उसके पास एक औ़रत आएगी (नाज़ से) उसके काँधे पर हाथ मारेगी। वह उसकी तरफ़ देखेगा तो उसे अपना चेहरा (उस औ़रत के चेहरे में) आईने से ज़्यादा साफ़ शफ़्फ़ाफ़ मालूम होगा। उसके जिस्म पर कम से कम दर्जे का मोती भी ऐसा चमकदार होगा कि वह पूरब व पश्चिम के दरमियान तमाम हिस्से को रोशन व मुनव्वर कर दे। वह औ़रत उस जन्नती को सलाम करेगी, वह उसके सलाम का जवाब देगा और उससे पूछेगाः तुम कौन हो? वह कहेगीः मैं और ज़्यादा (इकराम व सम्मान) में से हूँ। उस औ़रत के जिस्म पर सत्तर पोशाकें होंगी लेकिन फिर भी उस जन्नती की निगाह उसके जिस्म तक पहुँचेगी, यहाँ तक कि उसे उन पोशाकों के बाहर से उस औ़रत की पिंडली का गूदा नज़र आएगा। उसने ऐसे ताज पहने होंगे कि उनका मामूली सा हीरा भी पूरब व पश्चिम के दरमियान हर चीज़ को मुनव्वर कर दे। (१)

अल्लाह तआ़ला क़ुरआन करीम में फ़रमाते हैंः

وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ. (الواقعة: ٣٤)

तर्जुमाः और ऊँचे फ़र्श होंगे।

यानी तह-बतह बिस्तरे लगे होंगे। जन्नती उसपर बड़ी शान से बैठा होगा, उसी दौरान एक औ़रत नाज़ व नख़रे से उसके काँधे पर

(१) मुस्नद अहमद

हाथ मारेगी। उसे देखकर उसकी आँखें चकाचौंद हो जाएंगी। उसके हुस्न व ख़ूबसूरती से जन्नती हैरान होकर उससे पूछेगाः तुम कौन हो? तो उसका जवाब यह होगा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारा सम्मान व इकराम तथा और ज़्यादा इनामात का जो वायदा किया था मैं उसमें से हूँ। अल्लाह तआला ने तुम्हें उस फ़ज़ीलत से नवाज़ा है। इर्शाद है:

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ (ق: ٣٥)

तर्जुमाः उन लोगों को वहाँ सब कुछ मिलेगा जो वे चाहेंगे और हमारे पास और भी ज़ायद है।

फ़रमाया:

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ (يونس: ٢٦)

तर्जुमाः जो लोग नेकी करते रहे उनके लिए भला ही है और उसके अ़लावा भी।

जन्नत होगी, दीदारे खुदावन्दी होगा, तरह-तरह की नेमतें और क़िस्म-क़िस्म की दिल लुभाने वाली चीज़ें होंगी। दुनिया में नेक आमाल पर जो वायदे फ़रमाए थे वे पूरे करने के बाद अल्लाह तआला अपनी तरफ़ से मोमिनों का मुख़्तलिफ़ चीज़ों से इकराम फ़रमाएंगे, उनमें से एक इकराम यह हसीन व ख़ूबसूरत औरत भी होगी।

खेती-बाड़ी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है: नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह बयान फ़रमा रहे थे, आपके पास एक देहाती भी बैठे हुए थे, कि एक जन्नती ने अपने परवर्दिगार से खेती-बाड़ी की इजाज़त माँगी, अल्लाह जल्ल शानुहू ने उससे फ़रमायाः **क्या तुम जो** चाहते हो **वह तुम्हें** मिलता नहीं है? उसने कहाः क्यों

नहीं! अलबत्ता मेरा दिल चाहता है कि मैं काश्तकारी करूँ। चुनाँचे वह बीज बोएगा और आँख झपकने से पहले वह उग जाएगा और खेती पक कर और कटकर तैयार और पहाड़ के बराबर उसका ज़ख़ीरा लग जाएगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगेः ऐ इब्ने आदमः लो (तमन्ना पूरी कर लो) तुम्हारा पेट तो किसी चीज़ से भरता ही नहीं है। उन देहाती ने कहाः बखुदा! वह कोई कुरैशी या अन्सारी ही होगा इसलिए कि यही लोग खेती-बाड़ी करने वाले हैं, हम तो काश्तकारी करते नहीं हैं। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम मुसकुरा दिए। (१)

यानी जन्नत में इन्सान जो चाहेगा आनन-फ़ानन ज़रा सी देर में एक लम्हे में हो जाएगा। इन्सान का पेट किसी चीज़ से नहीं भरता, एक ख़्वाहिश पूरी होती है तो दूसरी की तमन्ना पैदा हो जाती है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे कि जन्नत में हर तरह की नेमत, राहत व आराम और तरह-तरह की रंगीनियाँ मौजूद हैं लेकिन फिर भी काश्तकारी का शौक़ है, लो इसे भी पूरा कर लो। इस हदीस में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस जानिब इशारा भी फ़रमाया है कि इन्सान जिस धन्धे में लगा होता है वही उसपर ग़ालिब रहता है, उसकी तमन्ना व ख़्वाहिश लाहिक़ होती है। बरतन में जो पानी होता है वही उसमें से टपकता है। इसलिए इन्सान को दुनिया की मुहब्बत, उसकी चीज़ों से ताल्लुक़ के बजाय अल्लाह जल्ल शानुहू से ताल्लुक़ पैदा करना चाहिए। उसके दीन की सरबुलन्दी की कोशिश में मगन रहना चाहिए।

जन्नत में नींद न होगी

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः एक साहिब ने

(१) बुख़ारी शरीफ़

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछाः क्या जन्नती सोएंगे? फ़रमायाः नींद मौत की बहन है और जन्नत वाले कभी मरेंगे नहीं। (१)

अल्लाह तआ़ला का दीदार

अहले सुन्नत का मज़हव यह है कि अल्लाह जल्ल शानुहू की दीदार मुम्किन है। अ़क़्ली एतिबार से नामुम्किन नहीं और इसपर सब एक राय हैं कि आख़िरत में मोमिनों को दीदारे इलाही हासिल होगा, काफ़िर उससे महरूम रहेंगे। बाज़ अहले बिद्अ़त, मोतज़िला, ख़्वारिज और बाज़ मर्जिया यह कहते हैं कि मख़्लूक़ ख़ालिक़ को नहीं देख सकती और दीदारे इलाही अ़क़्ली तौर पर नामुम्किन है, यह अ़क़ीदा बिल्कुल ग़लत और खुली जहालत है। किताबुल्लाह, अहादीसे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, सहाबा व ताबिईन व तमाम अगले-पिछले उलमा व बुज़ुर्ग इस पर एकमत हैं कि अल्लाह तआ़ला का दीदार होगा। बीस से ज़ायद सहाबा ने इसे रिवायत किया है। दुनिया में अल्लाह तआ़ला का दीदार मुम्किन है लेकिन उलमा और बुज़ुर्गों की अक्सरियत का मज़हब यह है कि दुनिया में न होगा।

चौदहवीं का चाँद

हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः तुम लोग अपने परवर्दिगार को साफ़-साफ़ देखोगे। एक रिवायत में आता हैः हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास बैठे थे कि आपने चौदहवीं रात के चाँद को देखा और फ़रमायाः तुम अपने परवर्दिगार को इस तरह देखोगे जिस तरह इस चाँद को देख रहे हो। उसके देखने में

(१) इस हदीस को बैहक़ी ने 'शोअबुल ईमान' में रिवायत किया है।

...-भाड़ (धक्कम पेल) न करोगे। अगर तुम यह कर सको कि सूरज निकलने और सूरज डूबने से पहले की नमाज़ के बारे में मग़लूब न हो तो ऐसा कर लो, फिर यह आयते करीमा तिलावत की:

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا۔ (طٰه: ١٣٠)

तर्जुमाः और अपने परवर्दिगार की तस्बीह करते रहिए तारीफ़ के साथ, सूरज निकलने से पहले और उसके गुरूब होने से पहले। (१)

मालूम हुआ कि जो शख़्स पाँचों वक़्त की नमाज़ की पाबन्दी करेगा वह अपने परवर्दिगार को देखेगा। मग़लूब न होने का मतलब यह है कि किसी काम-काज की वजह से फ़ज्र व अ़स्र को ज़ाया मत करो चूंकि आ़म तौर से फ़जर नींद की नज़्र हो जाती है और अ़स्र सैर व तफ़रीह और ख़रीद व फरोख़्त के, इसलिए उनके एहतिमाम का और ज़्यादा हुक्म दिया ताकि ज़ौक़ व शौक़ से पाबन्दी करें।

पर्दा हटा दिया जाएगा

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है: जन्नती जब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे: क्या तुम कुछ और भी चाहते हो? वे कहेंगे: क्या आपने हमें सुर्ख़-रू नहीं फ़रमाया? क्या आप ने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमाया और जहन्नम से नजात अ़ता नहीं फ़रमाई? फ़रमायाः हिजाब (पर्दा) हटा दिया जाएगा और वे अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार करेंगे, उन्हें अपने परवर्दिगार के दीदार से ज़्यादा कोई और चीज़ महबूब और प्यारी नहीं होगी। फिर यह आयत तिलावत फ़रमाई:

---

(१) बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ۔ (يونس: ٢٦)

तर्जुमाः जो लोग नेकी करते रहे उनके लिए भलाई है और उसके अ़लावा भी।

यानी अल्लाह तआ़ला जब उनसे किसी और चीज़ की भी तमन्ना का सवाल करेंगे तो वे कहेंगे कि आपने हमें अपनी इतनी अ़ज़ीम नेमतों से नवाज़ा है, इससे बढ़कर और नेमत क्या होगी? जन्नत में तमाम नेमतें, आराम और राहतें हासिल हैं। उसपर अल्लाह तआ़ला उनकी आँखों से हिजाब (पर्दा) हटा देंगे और तजल्ली से नवाज़ेंगे जो सबसे बड़ी नेमत और सबसे ज़्यादा खुश करने वाली दौलत होगी। अल्लाह तआ़ला हमको भी इसका मुस्तहिक़ बनाएं।

सबसे कम और सबसे बड़े दर्जे वाला जन्नती

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया हैः जन्नत में सबसे कम दर्जे वाला शख़्स वह होगा जो अपने बाग़ात, बीवियों, ऐश व आराम की चीज़ों, ख़ादिमों, मसहरियों को एक हज़ार साल की दूरी के बराबर फैला देखेगा और अल्लाह तआ़ला के यहाँ जो सम्मनित व इकराम वाला होगा वह अल्लाह तआ़ला का सुबह व शाम दीदार करेगा। फिर यह आयते करीमा तिलावत फ़रमाईः

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ، اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ۔ (القيامة: ٢٢،٢٣)

तर्जुमाः कितने ही चेहरे उस दिन खुश और खिले हुए होंगे और अपने परवर्दिगार की तरफ़ देख रहे होंगे।

यानी उसको इतनी बड़ी मिक़दार (मात्रा) में बाग़ात, हूरें और दूसरी नेमतें मिलेंगी जो हज़ार साल की दूरी के बराबर फ़ासले पर

फैली हुई होंगी। कम दर्जे वाले जन्नती की बादशाहत का यह हाल है तो फिर बड़े दर्जे वाले का क्या हाल होगा खुद अन्दाज़ा कर लीजिए। उसकी हुकूमत व बादशाहत बहुत बड़ी होगी और साथ ही वे अपने परवर्दिगार के दीदार में ऐसे मगन और खोए हुए होंगे कि किसी और की तरफ़ तवज्जोह न करेंगे। अल्लाह तआ़ला की मारिफ़त रखने वाले दुनिया में भी उसमें ऐसा फ़ना और मुन्हमिक होते हैं कि उन्हें दुनिया तो दुनिया अपनी भी फ़िक्र नहीं रहती, तो फिर भला जब दीदारे खुदावन्दी हो तो उसमें खो जाने और डूब जाने का क्या आ़लम होगा? इसको ऊपर दर्ज की हुई आयत में बयान किया गया है।

अल्लाह तआ़ला के दीदार की नज़ीर

हज़रत अबू रज़ीन अ़क़ीली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः मैंने अ़र्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हममें से हर शख़्स क़ियामत के दिन बिला किसी रुकावट के यक्ता व तन्हा होकर अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार करेगा? फ़रमायाः क्यों नहीं! मैंने पूछा उसकी नज़ीर किया है? फ़रमायाः ऐ अबू रज़ीन! क्या तुममें से हर शख़्स चौदहवीं रात के चाँद को बिला किसी रुकावट के अपनी-अपनी जगह पर नहीं देखता है? उन्होंने अ़र्ज़ कियाः क्यों नहीं, फ़रमायाः वह तो अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ में से एक मख़्लूक़ है, अल्लाह जल्ल शानुहू तो उससे बहुत बड़े रुतबे वाले और बहुत बड़ी शान व इज़्ज़त वाले हैं। (१)

हज़रत अबू रज़ीन रज़ियल्लाहु अ़न्हु को इश्काल यह था कि इतने बड़े मजमे और सारे आ़लम के इकट्ठा होने के बाद सब एक ही वक़्त में दीदारे खुदावन्दी किस तरह कर सकेंगे? इसी लिए उसकी किसी दुनियावी मिसाल व नज़ीर का सवाल किया तो नबी-ए-करीम

(१) अबू दाऊद शरीफ़

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसके जवाब में यह फ़रमाया कि जिस तरह सारी दुनिया अपनी-अपनी जगह पर बिना किसी को तक्लीफ़ पहुँचाए धक्कम पेल किए बग़ैर चाँद को अच्छी तरह से देख लेता है, कोई भी दूसरे के देखने में रुकावट नहीं बनता इसी तरह अल्लाह जल्ल शानुहू के दीदार से हर शख़्स अपनी-अपनी जगह लुत्फ़ व लज़्ज़त हासिल करेगा और यह सबसे बड़ी नेमत होगी।

नूर ही नूर

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछाः क्या आपने अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार क्या है? फ़रमायाः "नूरुन अन्ना अराहु" (वह तो) नूर हैं मैं उन्हें किस तरह देख सकता हूँ। (१)

यानी अल्लाह जल्ल शानुहू नूरों के नूर और सबसे बड़े नूर हैं।

इर्शाद हैः

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ۔ (النور: ٣٥)

यानी अल्लाह जल्ल शानुहू अपनी ज़ात के एतिबार से ज़ाहिर हैं, दुनिया का ज़र्रा ज़र्रा उनके वजूद पर दलालत करता है, दुनिया को मुनव्वर व रोशन करने वाले अल्लाह तआ़ला ही हैं, अल्लाह जल्ल शानुहू के नूर को देखना किसके बस की बात है। अल्लाह जल्ल शानुहू ने नूर को अपने और बन्दों के दरमियान हिजाब (आड़ और पर्दा) बनाया हुआ है, जिस तरह अंधेरा देखने के दरमियान रुकावट बनता है इसी तरह तेज़ रोशनी भी आँखों को चकाचोंद कर देती है और आँखें उसके देखने से आ़जिज़ आ जाती हैं। तो मायने यह हुए कि वह तो नूर हैं, मैं भला उन्हें किस तरह देख सकता हूँ।

(१) मुस्लिम शरीफ़

या इसके मायने ये हैं कि मैंने सिर्फ नूर ही नूर को देखा ज़ाते बारी तआ़ला को न देख सका, नूर ज़ाते इलाही के दीदार के दरमियान रुकावट बन गया, मैंने एक बड़ी पुरनूर ज़ात की ज़ियारत की है।

अल्लाह तआ़ला की ज़ियारत

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने नीचे लिखी गयी आयत के बारे में फ़रमायाः

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰهُ.........وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى. (النجم: ١١-١٢)

तर्जुमाः दिल ने कोई ग़लती नहीं की देखी हुई चीज़ में..........और उन्होंने उसको एक बार और भी देखा है।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अल्लाह जल्ल शानुहू को अपने दिल के ज़रिए से दो बार देखा है। तिर्मिज़ी की रिवायत में है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने परवर्दिगार को देखा है। हज़रत इक्रमा ने फ़रमायाः मैंने अ़र्ज़ कियाः क्या अल्लाह तआ़ला यह नहीं फ़रमाते हैं:

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ. (الانعام: ١٠٣)

तर्जुमाः उसे निगाहें नहीं घेर सकतीं और वह निगाहों को घेरे हुए है।

उन्होंने फ़रमायाः ताज्जुब है तुमपर! यह उस वक़्त के लिए है जब वह अपने उस मख़्सूस नूर के साथ तजल्ली फ़रमाएं जो उनका ज़ाती नूर है, और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने परवर्दिगार को दो बार देखा है। (१)

इसरा व मेराज की रात नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार किया था या नहीं? इसके

(१) मुस्लिम शरीफ़

बारे में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से यह नक़ल किया गया है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस रात अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार नहीं किया था। ऊपर दर्ज दोनों आयतों में जिस दीदार का तज़किरा है उससे मुराद है हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम को देखना। लेकिन जमहूर इस बात के क़ायल हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़ियारत की है, किस तरह की? उसके बारे में बाज़ हज़रात इस बात के क़ायल हैं कि यह ज़ियारत दिल से थी आँख से न थी, और बाज़ हज़रात आँखों से देखने के क़ायल हैं और यही सही है। हज़रत इक्रमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के इश्काल के जवाब में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह बतलाया कि अगर अल्लाह जल्ल शानुहू अपने असल नूर के साथ तजल्ली फ़रमाएं तो उस वक़्त इदराक (रसाई और पाना) नहीं हो सकता लेकिन अगर इतनी मिक़दार (मात्रा) में तजल्ली फ़रमाएं जिसे इन्सानी क़ुव्वत बर्दाश्त कर सके तो ऐसी सूरत में उसका इदराक हो सकता है।

हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम

हज़रत शअ़बी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमायाः हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा अ़रफ़ा में हज़रत कअ़ब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मिले और उनसे किसी चीज़ के बारे में पूछा। हज़रत कअ़ब ने इतने ज़ोर से अल्लाहु अकबर कहा कि उनकी आवाज़ पहाड़ों से टकरा कर वापस आई। हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमायाः हम हाशिम की औलाद हैं। हज़रत कअ़ब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने दीदार और कलाम को हज़रत मुहम्मद और हज़रत मूसा अ़लैहिमस्सलातु वस्सलाम के दरमियान तक़सीम फ़रमाया है।

चुनाँचे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से दो बार गुफ़्तगू फ़रमाई। हज़रत मसरूक़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमायाः मैं हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ कियाः क्या हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार किया है? उन्होंने फ़रमायाः तुमने ऐसी बात की है जिससे मेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। मैंने अ़र्ज़ कियाः ज़रा सुकून से काम लीजिए फिर मैंने यह आयते करीमा तिलावत कीः

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى۔ (النجم: ١٨)

तर्जुमाः उन्होंने अपने परवर्दिगार (की कुदरत) के बड़े-बड़े अजायबात देखे।

उन्होंने फ़रमायाः यह आयते करीमा तुम्हें कहां लेजा रही है? (यानी तुम इसका ग़लत मतलब समझ रहे हो) इससे हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम मुराद हैं। तुम्हें यह किसने बतलाया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने परवर्दिगार को देखा था या आपने किसी ऐसी बात को छुपाया जिसके बतलाने का आपको हुक्म दिया गया था, या आप उन पाँच बातों को जानते हैं जिनके बारे में अल्लाह तआ़ला ने यह फ़रमाया हैः

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ.......... (لقمان: ٣٤)

तर्जुमाः बेशक अल्लाह ही को क़ियामत की ख़बर है और वही बारिश बरसाता है।

तो उसने बड़ा बोहतान बांधा। अलबत्ता आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम को उनकी असली सूरत-शक्ल में सिर्फ़ दो बार ही देखा था, एक बार 'सिदरतुल मुन्तहा' के पास और एक बार अजयाद (मक्का की घाटियों में एक जगह है)

में। उन (हज़रत जिबराईल) के छह सौ पर थे जिन्होंने आसमान के किनारों को भर रखा था। (१)

यह तिर्मिज़ी की रिवायत है। बुख़ारी व मुस्लिम ने कुछ ज़्यादती और इख़्तिलाफ़ के साथ इसे रिवायत किया है। उनकी रिवायत में है: मसरूक़ ने कहा: मैंने हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से अ़र्ज़ किया: अल्लाह तआ़ला के मुबारक फ़रमान:

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى، فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى۔ (النجم: ٨،٩)

तर्जुमाः वह नज़दीक हुआ और ज़्यादा नज़दीक हुआ, सो दो कमानों का फ़ासला रह गया बल्कि और भी कम।

का क्या मतलब है? उन्होंने फ़रमाया: यह तो हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम के बारे में है, वह इन्सानी शक्ल में आया करते थे, इस बार वह अपनी असली शक्ल व सूरत में आए थे उससे आसमान के किनारे भर गये थे।

हज़रत कअ़ब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के सवाल को बहुत बड़ा समझ कर ज़ोर से अल्लाहु अकबर कहा, मुम्किन है यह इसलिए कि अल्लाह जल्ल शानुहु के दीदार के बारे में सवाल किया गया है जिसके बारे में हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया था कि इसकी वजह से मेरे रूंगटे खड़े हो गये, या उस मक़ाम की बड़ाई और शौक़ की वजह से ऐसा किया हो। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने यह फ़रमाकर कि हम हाशिम की औलाद में से हैं इस जानिब इशारा किया कि हम इल्म वाले और जानकार हैं, किसी ऐसी बात का सवाल नहीं करते जो मुहाल या नामुनासिब हो, इसलिए आप परेशान न हों।

(१) बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़

"ल-क़द रआ मिन आयाति रब्बिहिल कुब्रा" से मुराद सिर्फ़ यही आयत नहीं बल्कि इससे मुराद है "सुम्-म दना फ-तदल्ला" से ज़िक्र की गयी आयत तक का हिस्सा।

अल्लाह का दीदार

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अल्लाह तबारक व तआ़ला के फ़रमाने मुबारकः

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰی۔ (النجم: ٩)

तर्जुमाः सो दो कमानों का फ़ासला रह गया बल्कि और भी कम।

औरः

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰی۔ (النجم: ١١)

तर्जुमाः दिल ने कोई ग़लती नहीं की देखी हुई चीज़ में।

औरः

لَقَدْ رَاٰی مِنْ اٰیَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰی۔ (النجم: ١٨)

तर्जुमाः उन्होंने अपने परवर्दिगार (की कुदरत) के बड़े-बड़े अ़जायबात देखे।

के बारे में फ़रमायाः इन तमाम आयतों में हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम के देखने का ज़िक्र है। हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम को आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देखा था उनके छह सौ पर थे। (१)

तिर्मिज़ी की रिवायत में आता हैः "मा क-ज़बल् फ़ुआदु मा रआ" यानी दिल ने देखी हुई चीज़ में कोई ग़लती नहीं की, फ़रमायाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत जिबराईल को रफ़रफ़

(१) बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़

में देखा था उन्होंने आसमान व ज़मीन के दरमियान की तमाम ख़ाली जगह को पुर किया हुआ था। तिर्मिज़ी और बुख़ारी की एक रिवायत में है "ल-क़द रआ मिन आयाति रब्बिहिल कुब्रा" यानी उन्होंने अपने परवर्दिगार के बड़े-बड़े कुदरत के अ़जायबात देखे, फ़रमायाः आपने सब्ज़ रफ़रफ़ वाले को देखा आसमान के तमाम किनारों को पुर किए हुए थे। इमाम मालिक बिन अनस से अल्लाह तआ़ला के फ़रमान "इला रब्बिहा नाज़ि-रतुन्" कि अपने परवर्दिगार की तरफ़ देख रहे होंगे, के बारे में पूछा गया और कहा गया कि बाज़ लोग कहते हैं (यानी मोतज़िला वग़ैरह) कि अल्लाह तआ़ला की नेमतों के मुन्तज़िर होंगे। इमाम मालिक ने फ़रमायाः उन लोगों ने झूठ कहा, फिर ये लोग अल्लाह तआ़ला के इस मुबारक फ़रमानः

كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ. (المطففين: ١٥)

तर्जुमाः हरगिज़ ऐसा नहीं (कि जज़ा व सज़ा न हो) ये लोग उस दिन अपने परवर्दिगार (के दीदार) से रोक दिए जाएंगे।

के बारे में क्या कहेंगे। इमाम मालिक ने फ़रमायाः क़ियामत में अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार लोग अपनी आँखों से करेंगे, और फ़रमाया कि अगर मोमिनों को क़ियामत में अपने परवर्दिगार का दीदार न होगा तो फिर अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को इससे महरूम रहने की आ़र (शर्म) न दिलाते, यह न फ़रमातेः

كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ. (المطففين: ١٥)

तर्जुमाः हरगिज़ ऐसा नहीं (कि जज़ा व सज़ा न हो) ये लोग उस दिन अपने परवर्दिगार (के दीदार) से रोक दिए जाएंगे। (१)

यानी अल्लाह जल्ल शानुहू का दीदार न कर सकेंगे और यह

(१) शर्हे सुन्ना

हिजाब (पर्दा और रुकावट) सबसे बड़ा अ़ज़ाब होगा जिस तरह अल्लाह तआ़ला का दीदार तमाम नेमतों से बढ़कर है। इर्शाद है: "लिल्लज़ी-न अह्सनुल हुस्ना व ज़ियादतुन्" यानी जो लोग नेकी करते रहे उनके लिए भलाई है और उसके अ़लावा भी। यानी जो लोग दीदारे खुदावन्दी के क़ाइल नहीं हैं वे उसके बारे में क्या कहेंगे, इसलिए कि मोमिन तो दीदारे खुदावन्दी से मस्त होंगे, उनपर खुदा की यह रहमत होगी, अपने खुदा-ए-जुलजलाल के दीदार से सुर्ख़-रू और फ़ायदा उठाने वाले होंगे। रफ़रफ़ के बहुत से मायने आते हैं। बाज़ हज़रात ने बिछौने और बिस्तर किए हैं, बाज़ ने कहा रेशम वग़ैरह का बना हुआ शानदार फ़र्श या इससे फ़रिश्तों के पर मुराद हैं, कहते हैं 'रफ़रफ़ुत्ताइर' यानी परिन्दे ने किसी चीज़ पर उतरने के लिए पर फैलाए।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: इस दौरान कि जन्नती नेमतों में डूबे होंगे उनके सामने एक ख़ास क़िस्म का नूर चकमेगा, वे सर उठाकर देखेंगे कि ऊपर से अल्लाह जल्ल शानुहू मुतवज्जह हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे: जन्नत वालो! तुमपर सलामती हो, यही मुराद है अल्लाह तआ़ला के इस इर्शाद से:

سَلَامٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ۔ (يٰسٓ: ٥٨)

तर्जुमा: सलाम उन्हें कहा जाएगा परवर्दिगार मेहरबान की तरफ़ से।

अल्लाह जल्ल शानुहू उनको देखेंगे और वे अल्लाह जल्ल शानुहू को देखेंगे। जब तक दीदारे खुदावन्दी करते रहेंगे किसी और चीज़ की तरफ़ क़तई मुतवज्जह न होंगे यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला पर्दा कर लेंगे, उसके नूर का असर (उनपर) बाक़ी रहेगा। (१)

(१) इब्ने माजा शरीफ़

यानी अल्लाह के दीदार में ऐसी लज़्ज़त व कशिश होगी कि उसके सामने तमाम नेमतें और लज़्ज़तें भूल जाएंगे, बेखुद होकर इसमें खोए रहेंगे, फिर जब अल्लाह जल्ल शानुहू अपने बन्दों के दरमियान हिजाब (पर्दा) डाल देंगे तो वे दूसरी चीज़ों की तरफ़ तवज्जोह करेंगे। बहर हाल तजल्ली-ए-रब्बानी और ज़ियारते खुदावन्दी का असर उनके चेहरे के हुस्न व ख़ूबसूरती से साफ़ ज़ाहिर होगा।

अब तक ज़िक्र की गी हदीसें मिश्कात से ली गई थीं, आगे 'तंबीहुल ग़ाफ़िलीन' (पेजः ३६ से ४० तक) वाली मौकूफ़ हदीसें ज़िक्र की जा रही हैं।

जन्नत की हूरें

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमायाः जन्नत में एक ऐसी हूर होगी जिसे गुड़िया कहा जाएगा जो चार चीज़ों से बनाई गई होगी, मुश्क, अंबर, काफ़ूर और ज़ाफ़रान, और उसकी मिट्टी आबे हयात से गूंधी गई होगी, और अ़ज़ीज़ व करीम ज़ात ने उसे हुक्म दिया 'तैयार हो जाओ' और वह पैदा हो गई। तमाम हूरें उसकी आ़शिक़ होंगी। वह अगर एक बार समुद्र में थूक दे तो समुद्र का पानी मीठा हो जाए। उसके सीने पर लिखा होगा "जिस शख़्स को मुझ जैसी हूर चाहिए उसे मेरे परवर्दिगार की इताअ़त व फ़रमांबरदारी करना चाहिए।"

जन्नत के पेड़

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमायाः जन्नत की सरज़मीन चाँदी की और उसकी मिट्टी मुश्क की और पेड़ों के तने चाँदी के और उनकी टहनियाँ मोती और ज़बरजद की और पत्ते-फल नीचे

लटकते होंगे जो उन्हें खड़े-खड़े खाना चाहेगा उसे कुछ तक्लीफ़ न होगी और जो बैठकर खाना चाहे उसे भी कुछ मशक़्क़त न होगी, और जो लेटे-लेटे खाना चाहे उसे भी कुछ दिक़्क़त न होगी, फिर यह आयते करीमा तिलावत फ़रमाईः

وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا۔ (الدهر: ١٤)

तर्जुमाः और उनके मेवे उनके बिल्कुल इख़्तियार में होंगे।

यानी उनके फल क़रीब कर दिए जाएंगे ताकि खड़े होने और बैठने वाला सब आसानी से तोड़ सकें। वहाँ किसी काम में ज़हमत बर्दाश्त न करना पड़ेगी। हर चीज़ इशारे और हुक्म के ताबे होगी।

जन्नतियों की ख़ूबसूरती

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः क़सम है उस ज़ात की जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर किताब नाज़िल की, जिस तरह दुनिया में बुढ़ापे में इज़ाफ़ा होता रहता है इसी तरह जन्नत वालों के हुस्न व ख़ूबसूरती में इज़ाफ़ा होता रहेगा। इसलिए कि दुनिया फ़ानी है और बुढ़ापा फ़ना होने की पहली मन्ज़िल हेता है। जन्नत हमेशा रहने वाली और बाक़ी है इसलिए वहाँ बजाय गिरावट के तरक़्क़ी, और ज़वाल के बजाय कमाल हासिल होगा।

जन्नतियों का डील-डोल

हज़रत इक्रमा रहमतुल्लाहि अ़लैहि लिखते हैंः जन्नती मर्द व औरतें तैंतीस-तैंतीस साल के होंगे, क़द अपने जद्दे अमजद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के बराबर साठ हाथ होगा, जिस्म पर बाल न होंगे, बेदाढ़ी, सुरमगीं आँखों वाले नौजवान होंगे, सत्तर पोशाकें पहने होंगे, हर पोशाक हर घन्टे में सत्तर रंग बदलेगी और जन्नती मर्द

(लताफ़त की वजह से) अपना चेहरा अपनी बीवी के चेहरे, सीने और पिंडली में देखेगा और बीवी अपना चेहरा जन्नती के चेहरे, सीने और पिंडली में देखेगी। वहाँ न (मुँह से) थूक आएगा, न नाक की रेज़िश (पानी और रेठ वग़ैरह) और उसके अलावा और गन्दगियों का सवाल ही पैदा नहीं होता।

जन्नत का पेड़ तूबा

हज़रत मातब बिन सम्मी अल्लाह जल्ल शानुहू के फ़रमाने मुबारकः

طُوبىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ۔ (الرعد: ٢٩)

तर्जुमाः उनके लिए खुशहाली और अच्छा अन्जाम है।

के बारे में फ़रमाते हैं: तूबा जन्नत का एक पेड़ है जिसकी कोई न कोई टहनी जन्नत के हर घर पर साया किए हुए होगी, उसमें मुख़्तलिफ किस्म के फल लगे होंगे, उसपर बुख़्ती फ़रासानी ऊँट के बराबर परिन्दे बैठे होंगे। जन्नतियों में से जब कोई शख़्स उन परिन्दों में से किसी को खाने का इच्छुक होगा उसे बुलाएगा वह आकर उसके दस्तरख़्वान पर गिर जाएगा, उसका एक हिस्सा गोश्त की बोटियों की शक्ल में बन जाएगा दूसरा हिस्सा भुने हुए गोश्त की शक्ल में। वह उससे खाएगा (जब खा चुकेगा) तो फिर वह परिन्दा बनकर उड़ जाएगा। यह है इनाम और पैदा करने की ख़ूबी का कमाल, इन्सान की तमन्ना व ख़्वाहिश भी पूरी होगी और उसमें परेशानी व मशक़्क़त भी न होगी और फिर एक परिन्दा तरह-तरह की डिश बनकर जन्नती का दिल खुश करेगा।

पाँच चीज़ें

फ़क़ीह अबू लैस समरक़न्दी फ़रमाते हैं: जो इन सम्मानों से सम्मानित होना चाहे उसे पाँच चीज़ों की पाबन्दी करनी चाहिए।

१. अपने आपको तमाम गुनाहों और नाफ़रमानियों से बचाए। अल्लाह पाक का इशार्द है।

وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى، فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوٰى. (النازعات: ٤٠،٤١)

तर्जुमाः और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका होगा तो ऐसे का ठिकाना जन्नत ही है।

२. दुनिया के थोड़े से हिस्से पर क़नाअ़त करे इसलिए कि हदीस में आता है: जन्नत की क़ीमत दुनिया छोड़ना है।

३. नेकियों और ताअ़ात का हरीस रहे, हर नेकी अपनाए, हो सकता है वही मग़फ़िरत का ज़रिया और जन्नत का सबब बन जाए। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है:

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ أُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ. (الزخرف: ٧٢)

तर्जुमाः और यही वह जन्नत है जिसके अपने आमाल के बदले में तुम मालिक बना दिए गए हो।

एक आयत में है: "जज़ाअम् बिमा कानू तअ़मलून" यह उनके आमाल का बदला है। ये बुलन्द दर्जे नेकियों में लगे रहने की वजह से हासिल होंगे।

४. सालिहीन और नेक काम करने वालों से मुहब्बत रखे, उनके साथ मेल-जोल रखे, उठे-बैठे, इसलिए कि उनमें से जिस नेक आदमी की मग़फ़िरत कर दी जाएगी वह अपने साथियों और दीनी भाईयों की सिफ़ारिश करेगा जैसा कि हदीस शरीफ़ में आता है कि (दीनी) भाई

कसरत से बनाओ, इसलिए कि हर (मुसलमान) भाई क़ियामत के दिन सिफ़ारिश करेगा।

आख़िरत का आराम

५. कसरत से दुआ करे और अल्लाह जल्ल शानुहू से जन्नत और अच्छा ख़ात्मा होने की दुआ करे।

एक हकीम ने लिखा हैः आख़िरत के अज़ीम सवाब को देखते हुए दुनिया की तरफ़ मैलान जहालत है, और नेक आमाल के अज्र व सवाब को जानते हुए नेक आमाल की कोशिश न करना आजिज़ी है, और जन्नत में बहुत राहत व आराम है जो सिर्फ़ उसे ही मिलेगा जो दुनिया में बेआराम रहा हो (इबादत, ज़िक्र और ताआत में लगा रहा हो) वहाँ ऐसी ग़िना और मालदारी है जिसे वही पाएगा जिसने दुनिया फ़ुज़ूल धन्धे छोड़ दिए हों और दुनिया के मामूली से हिस्से पर इक्तिफ़ा की हो।

दुनिया आख़िरत की खेती है

एक ज़ाहिद (अल्लाह वाले) के बारे में लिखा है कि वह नमक और सब्ज़ी बग़ैर रोटी के खा रहे थे। एक साहिब ने उनसे कहाः आपने इसपर इक्तिफ़ा कर रखा है। उन्होंने जवाब दियाः दुनिया को आख़िरत कमाने के लिए पैदा किया है लेकिन तुमने दुनिया को ज़रूरत पूरी करने (यानी शौच) ही की जगह बना लिया है कि उम्दा से उम्दा चीज़ें खाकर बैतुलख़ला (शौचालय) चले जाते हो, मैं तो कमर सीधी रखने और इबादत की अदायगी के लिए खाता हूँ ताकि जन्नत तक पहुँच जाऊँ।

जन्नत का टिकट

हज़रत इब्राहीम बिन अधम रहमतुल्लाहि अ़लैहि के बारे में लिखा है कि उन्होंने हम्माम में दाख़िल होना चाहा तो हम्माम वाले ने उन्हें अन्दर जाने से रोक दिया और कहाः पैसे दीजिए फिर अन्दर जाइएगा। वह रोने लगे और फरमायाः ऐ अल्लाह! मुझे शैतानों के घर में बिना टिकट मुफ़्त में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं दी जा रही है तो भला अंबिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम और सिद्दीक़ीन के घर में मुफ़्त में बिना टिकट दाख़िला किस तरह होगा।

जन्नत की क़ीमत

लिखा है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने किसी नबी अ़लैहिस्सलाम पर "वही" नाज़िल फ़रमाईः इब्ने आदम! तू दोज़ख़ के ख़रीदने के लिए तो बहुत पैसे ख़र्च करता है लेकिन जन्नत मामूली सी क़ीमत पर भी नहीं ख़रीदता।

इसका मतलब यह है कि अगर कोई फ़ासिक़ फ़ाजिर (बुरा और गुनाहगार आदमी) अपने जैसे लोगों की मेहमान नवाज़ी करना चाहता है तो उसपर सैकड़ों रुपये बड़े आराम से ख़र्च कर देता है, और उसे कुछ भी महसूस नहीं होता, तो वह गोया ज़्यादा पैसों में दोज़ख़ ख़रीदता है। और अगर वह अल्लाह तआ़ला के लिए दो-चार रुपये ख़र्च कर ले, ग़रीबों और मिस्कीनों को बुला ले और उनकी दावत कर दे, यह बात उसके लिए जन्नत का बदला बनेगी, यह उसपर बहुत भारी गुज़रती है।

जन्नत व दोज़ख़ का दाख़िला

हज़रत अबू हाज़िम रहमतुल्लाहि अ़लैहि से रिवायत है फ़रमायाः

अगर जन्नत में दाख़िला इस शर्त पर मिलता कि दुनिया की तमाम पसन्दीदा चीज़ें छोड़ दी जाएं तब भी जन्नत के मुक़ाबले पर यह आसान था। और अगर दोज़ख़ से नजात उस सूरत में मिलती कि इन्सान हर क़िस्म की तक्लीफ़ें झेले तब भी यह उसके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं है।

फिर भला इस सूरत में मामला कितना आसान और सौदा कितना सस्ता है कि आपको अपनी पसन्दीदा चीज़ों का हज़ारवाँ हिस्सा छोड़ने पर ही जन्नत मिल रही है और तक्लीफ़ों का हज़ारवाँ हिस्सा बर्दाश्त करने पर जहन्नम से नजात मिल रही है।

जन्नत का मेहर

हज़रत यहया बिन मुआज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमायाः दुनिया का छोड़ना बहुत मुश्किल है और जन्नत का छोड़ना इससे भी ज़्यादा मुश्किल है। और जन्नत का मेहर दुनिया को छोड़ना है। जैसे दुनिया में हर चीज़ का एक बदल होता है, शादी में औ़रत को मेहर दिया जाता है इसी तरह जन्नत की भी एक क़ीमत है और वह यह है कि दुनिया से किनारा कर लिया जाए। दुनिया में दिल न लगाया जाए। दुनिया में इस तरह रहे जिस तरह कश्ती पानी में रहती है कि पानी कश्ती के बाहर होता है अगर वह उसके अन्दर आ जाए तो कश्ती डूब जाएगी। इसी तरह दुनिया की मुहब्बत दिल में न हो, दिल में खुदा की मुहब्बत रची-बसी हो, हाँ दुनिया अ़मल करने की जगह है, आख़िरत की खेती है इसलिए आख़िरत की तैयारी में लगा रहे।

आने वाले पेजों में ज़िक्र हुआ हिस्सा 'बुस्तानुल आ़रिफ़ीन' (पेजः ४२८,४२६) से लिया गया है।

जन्नत की क़िस्में

फ़क़ीह अबू लैस फ़रमाते हैं: जन्नतें चार हैं। (१) जन्नतुल ख़ुल्द (२) जन्नतुल फ़िरदौस (३) जन्नतुल मावा (४) जन्नाते अ़द्न। जन्नत के आठ दरवाज़े हैं।

नेमत का दस्तरख़्वान

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया: जन्नत में सबसे कम दर्जे वाला वह शख़्स होगा जिसे जन्नत में पाँच सौ साल की दूरी की जगह मिलेगी और उसे पाँच सौ हूरें मिलेंगी और जन्नती अपनी बीवी से दुनिया की पूरी उम्र के बराबर मुआ़नक़ा किए (यानी गले से लगा) रहेगा। उसके सामने नेमत का दस्तरख़्वान लगाया जाएगा लेकिन दुनिया की सारी उम्र के बराबर मुद्दत में भी उसका पेट नहीं भरेगा, यही मामला पीने में होगा।

जन्नत की नेमतों की नज़ीरें

लिखा है कि जन्नत की तमाम नेमतों की दुनिया में नज़ीर (मिसाल और उदाहरण) पाई जाती है। चुनाँचे जन्नती खाएं पिएंगे लेकिन पेशाब-पाख़ने की ज़रूरत न पड़ेगी। इसकी नज़ीर दुनिया में इस तरह है जैसे माँ के पेट में बच्चा। जन्नतियों को ख़ादिम मिलेंगे, इन्सान जिस चीज़ की तमन्ना करेगा वह उसका हुक्म मिलने से पहले उसे हाज़िर कर देंगे। उन्हें उनकी पसन्दीदा चीज़ और उनकी ख़्वाहिश का उनके मुँह से कहने से पहले इल्म हो जाएगा। दुनिया में इसकी नज़ीर इन्सान के जिस्मानी अंग हैं कि इन्सान को जब किसी चीज़ की ख़्वाहिश होती है तो उसके जिस्मानी अंग उसे पहचान लेते हैं और वह उसके हुक्म देने और मुँह से कहने से पहले उसकी ख़्वाहिश पूरी कर

देते हैं।

जन्नत में एक पेड़ है जिसका नाम 'तूबा' है, उसकी जड़ नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दौलतकदे (रिहाइश के मक़ाम) में होगी और उसकी शाख़ें हर घर और जन्नत के हर कोने में होंगी। उसकी नज़ीर सूरज है कि उसकी रोशनी हर घर और हर जगह पहुँचती है; यह पहाड़, घोंसले और सूराख़ में दाख़िल होती और तमाम दुनिया में फैल जाती है। जन्नत का खाना न कभी ख़त्म होगा न उसमें कमी आएगी चाहे जन्नती कितना ही खा लें। दुनिया में उसकी नज़ीर कुरआन करीम है। लोग उसे सीखते, पढ़ते-पढ़ाते हैं लेकिन वह अपनी हालत में मौजूद है उसमें कोई कमी नहीं आती।

जन्नत में फैला हुआ साया होगा। दुनिया में उसकी नज़ीर वक़्त है जो सूरज निकलने से पहले और बाद का है यहाँ तक कि रात की स्याही आ जाए। चुनाँचे इसी तरह जन्नत में लम्बा फैला हुआ साया होगा। यही अल्लाह तआ़ला के इस फ़रमान में मज़कूर है:

اَلَمۡ تَرَ اِلٰی رَبِّکَ کَیۡفَ مَدَّ الظِّلَّ۔ (الفرقان:٤٥)

तर्जुमाः क्या तूने अपने परवर्दिगार पर नज़र नहीं की कि उसने साया को क्योंकर फैला दिया है।

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत है कि फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें एक ऐसी घड़ी के बारे में न बतलाऊँ जो जन्नती लोगों के वक़्त के जैसी है और वह वह है जो सूरज निकलने से पहले है। जन्नत का साया हमेशा रहेगा, उसमें हर जगह रहमत फैली होगी, बरकतों का दौर दौरा होगा। जन्नत के दारोग़ा का नाम रिज़वान है उन्हें रहमत व मेहरबानी अ़ता कर दी गई है।

ख़ात्मा

आयाते करीमा और अहादीसे नबविया आपने पढ़ लीं, उनके पढ़ने का हासिल यह होना चाहिए कि हर तरह जन्नत हासिल करने की कोशिश की जाए। दुनियावी मुसीबतों और तक्लीफ़ों को बर्दाश्त किया जाए, राहत व आराम को कुर्बान किया जाए, उन चीज़ों से बचा जाए जो जन्नत से दूर और जहन्नम के क़रीब करने वाली हैं और उन कामों को किया जाए जो जन्नत के क़रीब और जहन्नम से दूर करने वाले हैं।

१. मुसलमान होने, अल्लाह जल्ल शानुहू के एक होने और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व स़ल्लम के रसूल होने का इक़रार करने के बाद हर मुसलमान पर दिन और रात में पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ होती हैं। नमाज़ों को उनके मुक़र्ररा वक़्तों पर जमाअ़त से पढ़ने की कोशिश की जाए इसलिए कि:

रोज़े महशर कि जाँ गुदाज़ बुवद
अव्वलीं पुर्सिश नमाज़ बुवद

मर्दों को पाँचों वक़्त की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ना चाहिए इसलिए कि जो नमाज़ जमाअ़त से पढ़ी जाती है उसका उस नमाज़ के मुक़ाबले में पच्चीस या सत्ताईस गुना ज़्यादा अज्र मिलता है जो तन्हा पढ़ी जाए, औ़रतों को मक्रूह वक़्त शुरू होने से पहले पढ़ना चाहिए, इसमें किसी क़िस्म की कोताही तबाही का सबब बन सकती है।

२. जो हज़रात हैसियत वाले हैं उन्हें हर साल अपने माल की ज़कात देना चाहिए। ज़कात देने से माल पाक होता है, इन्सान जहन्नम की आग से बचता है, बाक़ी बचा हुआ माल चोरी, ज़ाया होने और तबाह होने से महफ़ूज़ रहता है। कन्जूसी की बीमारी का भी इलाज

होता है और साथ ही उससे माल में इज़ाफ़ा और बरकत भी होती है।

३. साल में रमज़ान मुबारक के रोज़े हर आ़क़िल बालिग़ पर फ़र्ज़ हैं। काहिली, सुस्ती और लापरवाही की वजह से इस अहम फ़रीज़े से ग़ाफ़िल नहीं रहना चाहिए। इसपर अज्र व सवाब जो मिलता है वह तो मिलता ही है उसके साथ-साथ इससे यह भी फ़ायदा हासिल होता है कि ग़रीबों की भूख-प्यास का एहसास पैदा हो जाता है, उनके साथ ग़मख़्वारी आसान हो जाती है, फिर उससे साल भर की बीमारियों का भी इलाज हो जाता है बशर्तेकि रोज़ा रोज़े की तरह रखा जाए। इफ़तार व सेहरी में पेट को ज़रूरत से ज़्यादा न भरा जाए और साथ ही रोज़े में झूठ बोलना, ग़ीबत करना, फ़ुज़ूल बातें और इधर-उधर की बद-निगाही करते फिरने से बचा जाए।

४. जिन हज़रात के पास दौलत है वे हज और उमरः भी करें। हज से गुनाह माफ़ होते हैं, इस्लाम की बुनियादों में से एक बुनियाद है, अल्लाह जल्ल शानुहू के इश्क़ में मस्त होकर हाजी लिबास-पोशाक, गर्मी, सर्दी, भूख, प्यास सबसे बेनियाज़ होकर तलबिया पढ़ता हुआ निकलता है। कभी मक्का मुकर्रमा में बैतुल्लाह का तवाफ़ हो रहा है, कभी सफ़ा व मर्वा के दरमियान सई, कभी आबे ज़म्ज़म ईमान व यक़ीन को बढ़ा रहा है, कभी काबा के ग़िलाफ़ को पकड़कर अपनी ग़लतियों, कोताहियों और गुनाहों की माफ़ी के असबाब मुहैया किए जा रहे हैं, कभी मिना में हैं तो कभी अ़रफ़ात के मैदान में, कभी रमी हो रही है कभी ज़िब्ह, कभी सर को मुंडवाया या बाल कतरवाए जा रहे हैं।

५. क़ुरआने करीम की तिलावत रोज़ाना करनी चाहिए। दिन की शुरूआ़त अल्लाह जल्ल शानुहू के मुबारक कलाम से हो। रोज़ाना एक

पारा पढ़ सकें तो सुब्हानल्लाह वरना जितना हो सके रोज़ाना ज़रूर पढ़ें। कुरआन पढ़ना अज्र व सवाब का सबब और जन्नत में दाख़िले का मूजिब है। कुरआने करीम पढ़ने वाला अल्लाह तआ़ला से मुख़ातिब होता है।

जिसने कुरआन पढ़ा गोया किया हक़ से कलाम
वाह क्या कुर्ब का सामान है कुरआन शरीफ़

कुरआने करीम में ज़िक्र हुए अहकामात पर अ़मल किया जाए और उन चीज़ों से बचा जाए जिनसे बचने का हुक्म दिया गया। पिछली क़ौमों के वाक़िआ़त से इब्रत का सबक़ हासिल किया जाए। बच्चों को पढ़ाया जाए उसका हाफ़िज़ बनाया जाए, हो सके तो उसके मायने व मतालिब समझने की कोशिश करें।

६. ज़रूरत के मुताबिक़ रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से मुताल्लिक़ अहकाम व मसाइल सीखें ताकि जिस वक़्त अल्लाह तआ़ला का जो हुक्म हो उसपर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ हो सके। इतना इल्मे दीन हासिल करना हर मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है जिससे रोज़े नमाज़ वग़ैरह को सही तौर से अदा कर सके। बच्चों को भी बचपन ही से उनकी उम्र के मुताबिक़ अहकाम व मसाइल सिखाना चाहिएं।

७. ग़रीबों, मिस्कीनों, मोहताजों, बेवाओं, ज़रूरत-मन्दों और हाजत-मन्दों के साथ नरमी से पेश आइए, उनके साथ जो ग़मख़्वारी और इमदाद व सहयोग हो सके कीजिए। अल्लाह तआ़ला के नाम पर जितना हो सके रोज़ाना सदक़ा-ख़ैरात करके आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाइए।

८. बीवी-बच्चों, रिश्तेदारों और दोस्तों व पड़ौसियों से मुताल्लिक़

अहकाम जानिए। उनके हुक़ूक़ समझिए, उन्हें अदा कीजिए ताकि क़ियामत के दिन उनकी वजह से आपकी गिरफ़्त न हो। याद रखिए आपसे आपके बीवी-बच्चों, मातहतों, रिश्तेदारों और मौहल्ले वालों के बारे में भी पूछ-ताछ होगी।

६. अच्छी बातों का हुक्म देते रहिए। अगर किसी को ग़लत काम करता देखें तो निहायत हिक्मत, तदबीर और सलीक़े से उसे उसका नुक़सान बताकर उससे बाज़ रहने की तरग़ीब दीजिए। उसका अपमान या तौहीन का पहलू किसी सूरत में इख़्तियार न कीजिए वरना बजाय फ़ायदे के नुक़सान होगा। यह याद रखिए कि आप जो भी अच्छे काम, नेकियाँ, इबादतें वग़ैरह लोगों में जारी कराएंगे जितना अज्र उनके करने वालों को मिलेगा उतना ही सवाब आपको उसका ज़रिया बनने की वजह से मिलता रहेगा। जो शख़्स किसी ख़ैर की तरफ़ रहनुमाई करता है उसे उतना ही अज्र मिलता है जितना उसके करने वाले को मिलता है लेकिन उससे उसके करने वाले के अज्र में कमी नहीं आती। ये नेकियाँ आपके लिए जारी रहने वाला सदक़ा बनेंगी और क़ियामत तक अज्र व सवाब का ज़रिया और जन्नत में दर्जों के बुलन्द होने का ज़रिया होंगी।

१०. अपने बच्चों को शुरू से क़ुरआने करीम की तालीम दें और कोशिश करें कि वे आपके लि‹ आख़िरत का ज़ख़ीरा बनें जिसका तरीक़ा यह है कि उन्हें दीन के इल्म की तालीम दीजिए, उनकी दुनिया व दीन भी सँवरेगा और आपके लिए भी अज्र व सवाब का सबब होगा। दूसरी सूरत में उनकी अख़्लाक़ी बर्बादी, अमली कोताहियों वग़ैरह के आप ज़िम्मेदार होंगे, आपका गिरेबान होगा उनका हाथ होगा, इस फ़रीज़े को समझना चाहिए। बुज़ुर्गों की सोहबत में ले जाइए, अल्लाह

वालों से मिलाइए, उनके लिए अच्छे साथियों का चुनाव कीजिए, नमाज़ रोज़े का पाबन्द बनाइए, शुरू से उनकी दीनी तरबियत का ख़ूब एहतिमाम कीजिए। इस सिलसिले में अगर तरबियत का तफ़सीली तरीक़ा जानना चाहें तो "इस्लाम और तरबियते औलाद" का मुताला कर लीजिए।

११. दुनिया बनाने के साथ-साथ आख़िरत की फ़िक्र भी करें। आख़िरत की फ़िक्र को ग़ालिब कीजिए, दुनिया जैसी भी गुज़रे कोई परेशानी की बात नहीं, यह मुसाफ़िर ख़ाना है इसमें दिल न लगाइए। कोई भी अक़्लमन्द किसी स्टेशन पर अपना मकान तामीर नहीं करता, वहाँ बिस्तर बोरिया डालकर नहीं बैठता, वक़्त गुज़ारने के लिए वहाँ रुकता है फिर आगे चल देता है। दुनिया भी एक मुसाफ़िर ख़ाना, सराय और स्टेशन है, हमारी और आप सबकी मन्ज़िले मक़सूद आख़िरत है, उसकी बेहतरी और वहाँ की कामयाबी की कोशिश कीजिए, उसके लिए पूरी तरह कोशिश करते रहिए और ख़ैर का कोई ऐसा मौक़ा हाथ से न जाने दीजिए जो उसे बेहतर से बेहतर बनाता हो।

१२. कुछ वक़्त नवाफ़िल और ज़िक्र व तस्बीहात में भी लगा लिया कीजिए ताकि जन्नत में दरख़्तों का इज़ाफ़ा हो। आपके दरजे बढ़ें और दिल में अल्लाह तआला का नूर पैदा हो। दिल की स्याही दूर हो, दिल को इत्मीनान नसीब हो, इसलिए कि दिलों का सुकून सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला के ज़िक्र में है। अल्लाह तआला का इर्शाद है:

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ۔ (الرعد: ٢٨)

तर्जुमाः ख़ूब सुन लो कि अल्लाह के ज़िक्र से दिलों को इत्मीनान नसीब होता है।

१३. चौबीस घन्टों में चन्द मिनट निकाल कर अपने आमाल का जायज़ा ले लिया कीजिए कि आज कितना वक़्त दुनिया के लिए ख़र्च किया और कितना आख़िरत के लिए? कितनी नेकियाँ कीं और कितने गुनाह? कौनसे काम नहीं करना चाहिएं थे वे कर लिए और कौनसे करना थे वे छोड़ दिए? इससे नेकियाँ बढ़ेंगी, अच्छाइयों की तौफ़ीक़ मिलेगी और बुराइयाँ कम होंगी।

१४. अगर जन्नत में दाख़िला मक़सूद हो तो नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर चलिए, उसके मुताबिक़ अपने चौबीस घन्टे गुज़ारिए, बिद्अ़तों और रस्मों-रिवाजों और शरीअ़त के ख़िलाफ़ कामों से बचिए।

अल्लाह तआ़ाला हमारा आपका सबका ख़ात्मा कामिल ईमान पर करे और हमें जन्नतुल फ़िरदौस अ़ता फ़रमाए, आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ۔

लेखक

मुहम्मद हबीबुल्लाह मुख़्तार